मैथिली शाक्त साहित्य

(शास्त्रीय भगवती गीत)



अपराधो भवत्येव तनयस्य पदे पदे ।
कोऽपरः सहते लोके केवलं मातरं विना ॥



प्रकाशक :
उर्वशी प्रकाशन
१३ एम.आई.जी., हनुमान नगर, कंकड़बाग, पटना-२०

मैथिली शाक्त साहित्य

(शस्त्रीय भगवती गीत)

सम्पादक
डॉ० योगानन्द झा
कबिलपुर, दरभंगा



प्रकाशक :
उर्वशी प्रकाशन
१३ एम.आई.जी., हनुमान नगर, कंकड़बाग, पटना-२०

प्रकाशक :
उर्वशी प्रकाशन
१३ एम.आई.जी., हनुमान नगर, कंकड़बाग, पटना-२०

प्रकाशनवर्षम् - २००२ ई०

प्रति : ५००

मूल्यम् : १५.००

कम्प्यूटर टाइपसेटिंग :
क्रियेशन
धरहराकोठी, नयाटोला, पटना-८०० ००४

भूमिका

प्रथम संस्करण

शक्तिक उपासना भारतीय जीवन-पद्धतिक विशिष्ट अंग रहल अछि। समस्त भारतीय वाङ्मयमे पुष्कल शक्ति-पदक रचना भारतीय मानसक "नार्यस्तु यत्र पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता:"क साहित्यिक अभिव्यंजना थिक। नारीक कोमल भावना ओ मातृत्व, सहनशीलता ओ दायित्व, सर्जकता ओ पालन-प्रवृत्ति, दयालुता ओ सेवाभाव, करुणा ओ मृदुलता, वात्सल्य ओ सौन्दर्य शाक्त साहित्यक उपजीव्य रहल अछि।

नारीक एहि समस्त भावनाक अत्यन्त उदात्त स्वरूप मातृरूपमे समेकित रूपेँ पाओल जयबाक कारणेँ एही स्वरूपकेँ शक्तिपदमे प्रधानता भेटलैक अछि। स्वभावत: भक्त हृदयक भावनाक अभिव्यक्ति, मातृपदक प्रति अनुरक्ति, अर्चनापूर्वक वर-प्राप्तिक प्रति आसक्ति एवं पाप-दोष विमोचनक प्रवृत्तिक अनुकीर्त्तन शक्ति-पद सभमे सुलभतया अभिव्यंजित भेल अछि।

मिथिला आदिकालहिसँ शक्ति साधनाक केन्द्र रहल अछि। पुराण एवं तन्त्रक प्रभावेँ एहिठामक जनमानसमे शक्तिक विविध स्वरूपक प्रति श्रद्धाक विकास होइत रहल अछि, जकर साहित्यिक अभिव्यंजना मैथिली शाक्त साहित्यक माध्यमे होइत रहल अछि।

मैथिली साहित्यमे दुर्गा, काली, चण्डी, तारा, भुवनेश्वरी, कमला, षोडसी, भैरवी, सीता, छिन्नमस्ता, धूमावती, बंगला, मातङ्गी, सरस्वती, शीतला आदि विविधि अभिधानगे देवी ओ शक्तिस्वरूपाक अर्चनासँ सम्बद्ध पदावलीक रचना महाकवि विद्यापतिसँ आरम्भ कऽ आधुनिक कालधरिक कवि-नाटककार लोकनि अविच्छिन्न रूपेँ करैत रहलाह अछि। आदिशक्तिक एहि विभिन्न स्वरूपक अतिरिक्त पृथ्वी, गंगा, कमला, कोशी आदि विभिन्न प्राकृतिक उपादान सभमे सेहो देवीरूपक प्रत्यारोपणपूर्वक भक्ति साहित्यक रचना होइत रहल अछि। देवी अथवा पराशक्तिक विभिन्न स्वरूपक वर्णनमे साहित्यस्रष्टालोकनि पौराणिक आख्यान सबहिसँ भावग्रहण करैत रहलाह अछि। एहि प्रकारक साहित्यमे भक्तक भावनाक उद्रेक प्रमुख अछि। शक्तिस्वरूपा भगवतीक विविध रूप ओ रंग, भूषण ओ आयुध, वेश-वसन ओ स्वभाव, वाहन ओ दिव्य वैभवक संगहि अपरिमित महिमा, गुण विस्तार तथा शाक्त भक्तक दीनता, विवशता, आकांक्षा एवं आत्मनिवेदन एहि प्रकारक साहित्यक वर्ण विषय रहल अछि।

मध्यकालीन मैथिली शाक्त साहित्यक रचयिता लोकनिमे महाकवि विद्यापति,

सदानन्द, शंकर, गंगाधर, चतुरानन, लखनचन्द, महेश ठाकुर, महिनाथ ठाकुर, उमापति, लोचन, साहेबरामदास, गोविन्ददास, देवनाथ, जयकृष्ण, रमापति, देवानन्द, गोकुलानन्द, श्रीकान्तगणक, रामनाथ, मंगनीराम, लालकवि, कृष्णपति, जीवदत्त, वागीश्वर, सूरदास, दामोदर, शंभुदत्त, मदन उपाध्याय, रत्नपाणि, भानुनाथ, हर्षनाथ, आदिनाथ, लक्ष्मीपति, चिरञ्जीव, कान्हरदास, जलपादत, दास, नरसिंहदत्त, श्रवण सिंह आदि छथि। जाहिमे दशो महाविद्याक पृथक्-पृथक् गीतक रचनाक श्रेय रत्नपाणि ओ आदिनाथकेँ जाइत छनि आ हिनका दूनूकेँ मध्यकालीन शाक्त साहित्यक श्रेष्ठतम् कविमे राखल जा सकैछ। नेपालीय मैथिली शाक्त साहित्यक रचनाकार मध्य जगज्ज्योतिर्मल्ल, प्रतापमल्ल, जगत्प्रकाशमल्ल, जितामित्रमल्ल, भूपतिन्द्रमल्ल आदि प्रसिद्ध छथि।

आधुनिक कालक कविलोकनिमे चन्दा झा, दुर्गादत्त, गोपीश्वर, विश्वनाथ, म० रमेश्वर सिंह, जीवन झा, गणनाथ झा, श्रीकृष्ण, तेजनाथ झा, राजपंडित बलदेव मिश्र, यदुनाथ झा 'यदुवर', त्रिलोचन झा, त्रिलोकनाथ मिश्र, श्यामानन्द झा, बुद्धिनाथ झा, यदुनाथ मिश्र, रघुनन्दन दास, कालीकुमार दास, दीनबन्धु झा, सीताराम झा, श्री वल्लभ झा, भोला लाल दास, मधुप, ईशनाथ झा, जीवनन्द, आरसी प्रसाद सिंह, सुरेन्द्र झा 'सुमन', चन्द्रभानु सिंह, पं. जयमन्त मिश्र, प्रभुनारायण झा 'प्रदीप' चन्द्रमणि आदि मैथिली शाक्त-पदक उल्लेख्य रचनाकारलोकनि थिकाह। कवयित्री लोकनिमे राजलक्ष्मी, ललितेश्वरी देवी, श्यामा झा, नन्दिनी देवी, भैआनि देवी प्रमुख थिकी।

मैथिली शाक्त-साहित्यक विकासधाराक संकलन ओ समंजन एहि पोथीक उद्देश्य रहल। मुदा प्रकाशकीय असुविधा ओ अन्य विविध संयोगात् जे किछु प्रस्तुत अछि, से एहि दिशामे प्राथमिक प्रयास अछि। स्वभावतः सुधी पाउककेँ क्रमादिक विन्यासमे व्यतिक्रमक अतिरिक्तो अनेक विसंगति भेटतनि, जकर मार्जन तत्काल सम्भव नहि बूझि पड़ल।

अन्त मे हम उर्वशी प्रकाशनक अधिष्ठाता पं० गोपीकान्त झाजोक प्रति आभार व्यक्त करैत छियनि जे एहि संकलनकेँ पुस्तकाकार स्वरूप देलनि आ निरन्तर मैथिली साहित्यक अभिवर्द्धनक हेतु क्रियांशील रहैत छथि।

कबिलपुर, लहेरियासराय — **दोसर संस्करण** — **डॉ० योगानन्द झा**

मैथिली शाक्त साहित्यमे मुक्तक काव्यक ई दोसर परिवर्द्धित संस्करण पाठक लोकनिक आवश्यकता केँ ध्यान मे रखैत कयल गेल अछि मुदा किञ्चित परिवर्तनक संग ई अपन ओही आंशिक स्वरूपकेँ प्रस्तुत कऽ सकत जकर पूर्णता सहजहि सिद्ध कऽ सकैछ जे मैथिली काव्यक विकासयात्रा में शाक्त भावधारण एकटा महत्वपूर्ण उत्प्रेरक रहल अछि।

07-11-2002

-योगानन्द झा

गीत सूची





अपराधो भवत्येव तनयस्य पदे पदे ।
कोऽपरः सहते लोके केवलं मातरं बिना ॥

मैथिली शाक्त साहित्य

(शास्त्रीय भगवती गीत)

डॉ० योगानन्द झा

भगवती गीत

विद्यापति

(१)

जय-जय भैरवि असुर-भयाउनि, पशुपति-भामिनि माया ।
सहज सुमति वर दिअओ गोसाउनि, अनुगत गति तुअ पाया ।।
वासर रैनि शवासन शोभित, चरण चन्द्रमनि चूड़ा ।
कतओक दैत्य मारि मुँह मेललि, कतओ उगिलि कैल कूड़ा ।।
सामर बरन नयन अनुरंजित, जलद जोग फुल कोका ।
कट-कट विकट ओठ-पुट पाँड़रि, लिधुर फेन उठ फोका ।।
घन-घन-घनन घुघरू कत बाजय, हन-हन कर तुअ काता ।
विद्यापति कवि तुअ पद सेवक, पुत्र बिसरु जनि माता ।।
(प्राचीन गीत)

(२)

श्री गायत्री

जय जय भगविति भीमा भवानी । चारि वेदँ अवतरु ब्रह्मवादिनी ।
हरिहर ब्रह्मा पुछइत भमे । एकओ न जान आदि तुअ मरमे ।।
भनई विद्यापति राए मुकुटमणि । जिवओ रूप नारायण नृपति धरणि ।।
(प्राचीन गीत)

(३)

श्रीशक्ति

विदिता देवी विदिता हो अविरल केश सोहन्ती ।
एकानेक सहसको धारिनि अरि-रंगा पुरनन्ती ।।
कज्जलरूप तुअ काली कहिअए उज्जल रूप तुअ वाणी ।
रविमण्डल परचण्डा कहिअए, गङ्गा कहिअए पानी ।।
ब्रह्मा घर ब्रह्माणी कहिअए, हर घर कहिअए गौरी ।
नारायण घर कमला कहिअए, के जान उतपति तोरी ।।
विद्यापति कविवर इहो गाओल जाचक जन के गती ।
हासिनि देइ पति गरुड़नारायण देवसिंह नरपती ।।
(प्राचीन गीत)

(४)

श्रीकाली

आदि भवानि विनय तुअ पाय । तुअ सुमरैत दुरत दुर जाय ।
सिंह चढ़ल देवि देल परवेश। बघछल पहिरन योगिन वेश ।।

बाम लेल खपर दहिन लेल काति। असुरकँ बधय चलालि निशि राति ।
मारल असुर भक्त प्रतिपाल । बिछि-बिछि गाथल मुण्डक माल ।।
तोहि भल छाज देवि मुण्डहार । नूपुर शब्द उठय झनकार ।।
भनई विद्यापति काली केलि । सदा रहु मैया दाहिनि भेलि ।।
(प्राचीन गीत)

(५)

श्री दुर्गा

कनक-भूधर-शिखर-वासिनि, चन्द्रिकाचय चारु हासिनि ।
दशन-कोटि-विकास वङ्किम, तुलित चन्द्रकले ।।
क्रुद्ध-सुर-रिपु-बल-निपातिनि, महिष-शुम्भ-निशुम्भघातिनि ।
भीत-भक्त-भयापनोदन, पाटव-प्रबले ।।
जय देवि दुर्गे दुरित-तारिणि, दुर्ग मारि-विमर्द-कारिणि ।
भक्ति-नम्र-सुरासुराधिप-मङ्गलायतरे ।।
गगन-मण्डल-गर्भगाहिनि समर भूमिषु सिंहवाहिनि ।
परशु-पाश-कृपाण-सायक-शङ्ख-चक्र-धरे ।।
अष्ट-भैरवि-सङ्ग-शालिनि स्वकर-कृत्त-कपाल-मालिनि ।
दनुज-शोणित-पिशित-वर्धित पारणा-रभसे ।।
संसारबन्ध-निदान-मोचनि-चन्द्र भानु-कृशानु-लोचनि ।
योगिनीगण - नृत्य शोभित नृत्य भूमि रसे ।।
जगति पालन-जनन-मारण-रूप-कार्य-सहस्र-कारण ।
हरि-विरञ्चि महेश-शेखर-चुम्ब्यमान-पदे ।।
सकल-पापकला-परिच्युति-सुकवि-विद्यापति-कृत-स्तुति ।
तोषिते शिवसिंह-भूपति-कामना फलदे ।।
(विद्यापति गीतावली)

(६)

श्रीकालिका

पहिल पहर कालिका अवतार । सुर नर मुनि कर मंगलाचार ।।
दुसरे पहर देवि तुहि त्रिपुरारि । काली नागिनि पीठि भेलि असवारि ।
तेसर पहर देवि खप्पर हाथ । सिंह चढ़ल देवि खप्पर हाथ ।।
चौठ पहर देवि बाघछाल वेश। सहस्र कला लै उगथि दिनेश ।।
भनहि विद्यापति सुनु जगदम्बा । सेवक, जनके तुहीं अवलम्बा ।।
(मैथिल भक्त प्रकाश)

(७)

श्रीभगवती दिगम्बरि

भक्तक सुधि ले भगवति मोर । पुछिए दिगम्बरि की गति मोर ।।
पाट पटम्बर देलन्हि ओछाय । बैसली दिगम्बरि आसन लगाय ।।
तेजलहु मातु पिता कुल चारि । धैलहुँ भगवति शरण तोहारि ।।
भनहि विद्यापति कालिय सेवि । सदय रहब माहे दाहिनि देवि ।।

(८)

श्रीभगवती काली

ललित वसन देवि सिर सिन्दूर । हरखैत आवे देवी काली सरूप ।।
चौदिस जोगिन नचइत आब । पाँचो बहिन माँ हे मंगल गाब ।।
नव वेलपत्र ओ ओड़हुल फूल । और अधिक सोहे सुन्दर धूप ।।
सुन्दर सुन्दरि देवि भक्ति अराधिअ । नेपुर शब्द सुनि तुरत दुःख नासिअ ।।
भनहि विद्यापति कालिय सेवि । सतत रहब माहे दाहिनि देवि ।।
(मैथिल भक्त प्रकाश)

(९)

श्रीसीता

रे नरनाह सतत भजु ताही । जाहि नहि जननि जनक नहि जाही ।।
बसु नइहरा ससुरा के नाम । जननिक सिर चढ़ि गेलि ओही गाम ।।
सासुक कोर मे सुतल जमाए । समधि विलह सँ बिलहल जाए ।।
जाहि उदर सँ बाहर भेलि । से पुनि पलटि ततहि चलि गेलि ।।
भनहि विद्यापति सुकवि सुजान । कविक मरमकेँ कवि पहिचान ।।

(१०)

श्रीराधा

देख देख राधा रूप अपार ।
अपरुबके बिहिं आनि मेराओल खिति-तल लावनिसार ।।
अंगहि अंग अनंग मुरछाएत हेरए पड़ए अथीर ।
मनमथ कोटि-मथन करु जे जन से हेरि महिमधि गीर ।।
कत कत लखमि चरण तल नेओछए रंगिनि हेरि विभोरि ।
करु अभिलाष मनहि पद पंकज अहनिसि कोर अगोरि ।।

(११)

श्रीगंगा

बड़ सुख सार पाओल तुअ तीरे । छाड़इते निकट नयन वह नीरे ।।
कर जोड़ि बिनमओ विमल तरङ्गे । पुन दरसन होअ पुनमति गङ्गे ।।
एक अपराध छेमब मोहि जानी । परसल माए पाए तुअ पानी ।।

कि करब जप तप जोग धेयाने । जनम कृतारथ एकहि सनाने ।।
भनहिं विद्यापति समदओ तोहि। अन्तकाल जनि बिसरह मोहि ।।

(१२)

ब्रह्म कमण्डलु-वास-सुवासिनि सागर-नागर-गृह बाले ।
पातक महिष-विदारण-कारण धृत करवाल बीच माले ।।
जय गङ्गे जय गङ्गे शरणागत भय भङ्गे ।
सुर-मुनि-मनुज-रचित पूजोचित कुसुम विचित्रित तीरे ।
त्रिनयन-मौलि-जटाचय चुम्बित भूति-भुसित सित नीरे ।।
हरिपद-कमल-गलित मधुसोदर पुण्य पुनित सुर लोके ।
प्रबिलसदपरपुरी पद दान विधान विनाशित शोके ।।
सहज दयालुतया पातकि जन नरक निवारण निपुणे ।
रूद्रसिंह नरपति वरदायक विद्यापति कवि भणित गुणे ।।

(१३)

सुरसरि सेवि मोरा किछुओ ने भेला । पुनमति गंगा भगीरथ लय गेला ।।
जखन महादेव गंगा कएल दाने । सुन भेल जटा ओ मलिन भेल चाने ।।
उठबह बनिआ तोँ हाट बजारे । एहि पथ आओत सुरसरि धारे ।।
छोट मोट भगीरथ छितनी कपारे । से कोना लओताह सुरसरि धारे ।।
विद्यापति भन विमल तरंगे । अन्त सरन देव पुनमति गंगे ।।

(१४)

सुनिय डमरु धुनि, शिव पुनि पुनि, आब एत करु विसराम ।
पूजा उपचार लिय, सत्वर गङ्गाकेँ दिय, कहि देव हमरो प्रणाम ।।
करतीहि कृपा गङ्गा, सकल कलुख भङ्गा, आब जीव परसन भेल ।
एतै औतीह सुरधुनि, अपन किङ्कर गुनि, सब पातक दुर गेल ।।
थाकि गेलि जनी जाति, बेटा बेटी पोता नाति, कामति कहार सङ्ग साथी ।
मोर हेतु आउ एत, धन्यवाद लोक देत, सभ जन हरषि नहाथि ।।
भन कवि विद्यापति, दिअ देवि दिव्यगति, पशुपतिपुर पहुँचाय ।
गौरी सङ्ग देखि शिव, कि सुख पाओत जिव, से आब न कहल जाय ।।
(मिथिला तत्व विमर्श)

(१५)

श्री विश्वेश्वरी

जय जय अम्बा विश्वेश्वरि ! किछु ने फुरै जे करि ।।

मोर माथे धरि दिअ हाथे ।
चललहु सुरसरि, घनघाम परिहरि, तोहर अभयवर साथे ।।
पुरती हमरि आशा, शिव जटाजूटवासा, अनुकुलदेवी जत देवा ।
इहो तन परित्यागी, होयब सुमति भागी, शिवक जन्म भरि सेवा ।।
परजा रञ्जन मन, हरपति सब खन, हसाय खेलाय कर लेथि ।
अतिथिक सतकार, इष्ट पूजा उपचार, सुविचार धन नित देथि ।।
जननी समान आन, नारीगण मनमान, कविवर विद्यापति भाने ।
जे मोर बान्धब लोक, मन नै करथु शोक, कालगति अछि परमाने ।।
(तत्रैव)

लखनचन्द (१६)

श्रीचण्डी

नमओ नमओ चण्डी चरणयुग तोर। तोरित दुरित हर दिहै अभय वर।।
कट कट दसन रसन लह-लह कर। खड्गे खण्डि चण्डि रुहिर खपर भर।।
हेर जोह खोह करि धरए तुरए सुरि । मुह मेलए रुहि घट वट घोट करि ।।
लखनचन्द राय करए तुअ॰ भगवति। देहे अभय वर निज पदयुग रति ।।
(प्राचीन गीत)

चतुरानन (१७)

श्रीजयमङ्गला

जयमङ्गला जयमङ्गला ! होह परसनि देवि तोरितबला ।।
मधुकैटभ महिषासुर अतिबल धूम्रलोचन खयकारी ।
शुम्भ निशुम्भ देव-कंटक रन खनहि महाबल देल बिदारी ।।
जइसे सुरगण देलह अभयवर सकल असुरगन मारी ।
तइसे आस पुरह जगमाता रिपुगण हलह सँभारौ ।।
जे अभिमत कए जे नर चिन्तए से नर से फल पाबे ।
सर्व काज सिध करह भवानी कवि चतुरानन गावे ।।
(प्राचीन गीत)

सदानन्द (१८)

श्रीदुर्गा

जय जय दुर्गे दुर्गति हारिनि, सब सिधिकारिनि देवी ।
भुगुति मुकुति दुहु दुखेँ बिनु पाविअ तुअ पद पङ्कज सेवी ।।
विष्णु विरंचि विभावसु वासव शिव तुअ धरए धेयाने ।
आदि-सकति भव भाविनि केओ न अन्त तुअ जाने ।।

तनु अति सुन्दर मरकत मनि जनि तीनि नयन भुज चारी ।
शंख चक्र-शर कर तनु धारिनि शशिशेखर अनुसारी ।।
मणिमय कुण्डल हार मनोहर नूपुर घन घन बाजे ।
किंकिनि रन रन सुललित कंकण भूषण विविध विराजे ।।
पञ्चानन-वाहिनि दाहिनि होइ सुमरि महेश-विमोही ।
सदानन्द कह चरण-युगल तुअ सरन कएल जग जोही ।।
(प्राचीन गीत)

महाराज महेश ठाकुर (१९)

श्रीतारा

जय जय जय भय भञ्जिनि भगवति आदि शक्ति तुअ माया ।
जनि नव सजल जलद तुअ तनुरुचि पदरुचि पङ्कज छाया ।
मुण्डमाल वघछाल छुरित छवि लम्बित उदर उदारा ।
असि कुबलय कर काँती खप्पर सर्व रूप अवतारा ।।
विकट जटा तन चान तिलक लस भूषण भीषम नागे ।
खल खल हास आकाश निवासिनि मुद्रा मंडित मागे ।।
तरुण अरुण सम विषम विलोचन पीन पयोधर भारे ।
रकत रकत रसना लह लह कर रदन वदन विकराले ।।
भनथि महेश कलेश निवारिणि त्रिभुवन तारिणि माता ।
शव वाहिनि दाहिनि देवी रहु की करत कोपि विधाता ।।
(मैथिल भक्त प्रकाश)

(२०)

श्री गंगा

उधारिअ अधम जन जानि ।
हम बनिजार पाप बटमार । सुकृत बेसाहल सुरसरि धार ।
जेहिखन देखल धवल जलधार। जीवन जनम सुफल संसार ।।
सीकर-निकर-परस यदि भेल। मन अनुताप पाप दुरि गेल ।।
जे मम उधारल से मोर आधे । कहु मोर सुरसरि किय अपराधे ।।
भनथि महेश नमित कय शीस । तोहँ करुणामयि हमे निरदीस ।।
(प्राचीन गीत)

(२१)

गंगे अयलहुँ तोहर समाज । आब की करत यमराज ।।
गंगे दुर सौ देखल गंगा । गांग पाप न रहले आङ्ग ।।
गंगे तिल कुश जल लेल हाथ । गंगे तहिखन यमधुन माथ ।।

गंगे भनथि महेश सुजान । गङ्गे कलियुग गति नहि आन ।।
(मिथिला तत्व विमर्श)

(२२)

हे गंगे न गुमल भल मन्द यौवन दापे । गुपुत वेकत अरजल कत पापे।।
कत कत पाप कयल हम रोसे । अधम उधारिनि तोहर भरोसे ।।
निरधन धन जक राखल गोये । तुअ पय परसल हनल सब धोये ।।
दिअ दरसन मन आतुर मोरा । करिय कृतारथ लोचन जोरा ।।
कर जोड़ि विनति महेश निवेदे । मरण शरण दिअ अन्त परिछेदे ।।
(तत्रैव)

महाराज महिनाथ ठाकुर (२३)

श्रीकंकाली

वदन भयान कान शव कुण्डल विकट दशन धन पाँती ।
फूजल केश वेश तुअ के कह जनि नव जलधर काँती ।।
काटल माथ हाथ अति शोभित तीक्ष्ण खड्ग कर लाई ।
भय निर्भय वर दहिन हाथ लए रहिअ दिगम्बरि माई ।।
पीन पयोधर ऊपर राजित लिधुर स्रवित मुण्डहारा ।
कटि किंकिणि शव-कर करु मण्डित स्रिक वह शोणित धारा ।।
वसिय मसान ध्यान शव ऊपर योगिनि गण रहु साथे ।
नरपति पति राखिअ जगईश्वरि करु महिनाथ सनाथे ।।
(मैथिल भक्त प्रकाश)

लोचन (२४)

श्रीशिवंकरि

जय जय जय नत सतत शिवंकरि परिहित नर सिर माले ।
लम्बित रसन दसन अति भीषम वसन मिलल बघ्रछाले ।।
चउदिस मानुस माँसु मुदित अति फेरु फुकर कर रासे ।
मणिमय विविध विभूषण मंडित वेदि त्रिदित तुअ वासे ।।
भूत परेत पिशाच निशाचर अगनित जोगिनि जाले ।
जखने न जगत-जननि तुअ संगति तहँ न कहिअ कोन काले ।।
विमल बाल-रविमण्डल सन तुअ तीन नयन परगासे ।
असुर रुहिर मदिरा मद मातलि वदन अमिअ सम हासे ।।
तुअ अनुरुप सरुप बुझिअ नहि तैओ तोहर गुन गाऊ ।
जे कहि तुअ पद बन्ध करिअ देवि निअ जने लोचन लाऊ ।।

कृष्णपति (२५)

शंकरि शरण धयल हम तोर ।
कुकुरम देखि अधिक यदि कोपित की करता यम मोर ।।
सुर तरुअर तर शिव उर ऊपर वास हास अति घोर ।
सहस दिवसमणि चान कोटि जनि तनु दुति करत इजोर ।।
सहज खर्व अति गर्वक मातलि लम्बोदरि जगदम्बे ।
मनुज नागवर सकल सुरासुर सबकाँ तोहिँ अवलम्बे ।।
बाम हाथ माथ अति कोमल दहिन खर्ग कर काती ।
पाँच कपाल भाल अति राजित श्री इन्दीवर कांती ।।
शिव शव आसिनि संग योगिनि गण पहिरन वाघरि छाला ।
रक्त रक्त लहलह कर रसना नवयौवन मुण्डमाला ।
फणि नेउर केउर फणि कङ्कण हृदयहार फणि राजे ।
सहरसना फणि फणि-युग कुण्डल जटामुकुट फणि छाजे ।।
चउदिस फेकव शव मुण्डावलि चिता अग्नि सन गेहे ।
तीन नयन मणिमय सब भूषण नव जलधर सम देहे ।।
शिव सनकादि आदि ब्रह्मादिक नर मुनि धरत धेयाने ।
त्रिभुवन तारिणि नरक निवारिणि ! सुमति कृष्णपति भाने ।।
(मैथिल भक्त प्रकाश)

मंगनीराम (२६)

गोसाउनि

तोँहीँ धरनी तोँहीँ करनी, तोँहीँ जगतक मात ।। हे मा०।।
दश मास माता उदर मे राखल, दश मास दूध पियाब ।
निरंकार निरंजनि लक्ष्मीश्वरि भवघरनि तोँ कहाव ।।
सुरमाक रथ चाढ़ तोँहीँ बैसलि दुर्गा नाम धराव ।
पण्डित केर तोँ पोथी जाँचह, सरस्वति नाम सुनाव ।।
गाइनि मुख मे गान भए पैसलि, सुस्वर गीत सुहाव ।
मंगनीराम चरण पर लोटथि, भक्ति मुक्ति वर पाव ।।
(हिस्ट्री ऑफ मैथिली लिटरेचर)

शम्भुदत्त (२७)

आदिशक्ति

जय जय आदि शक्ति शुभदायिनि ! महिघर शायिनि देवी ।
सुर नर मुनि गण सकल सुखित मन केवल तुअ पद सेवी ।।

हमहु शरण धय चरण अराधल तोहि करुणामय जानी ।
तइओ रहल दुख सपनहुँ नहि सुख तकर परम होअ हानी ।।
हम सम अधम जगत नहि दोसर जप तप गति नहि जानी ।
अब हम मगन भेलहुँ भवसागर गति एक ताँहीं भवानी ।।
जत अपराध कएल भरि जीवन कहि न सकिअ तत माता ।
सुत शरणागत सेवक पामर सभक जननि ताँ त्राता ।।
दुहु कलजोड़ि अरज अवनत भए शम्भुदत्त कवि भाने ।
त्रिभुवनतारिणि अधम-उधारिणि ! देहु अभय वरदाने ।।
(मैथिली गीत रत्नावली)

शंकर

(२८)

श्रीतारा

गिरिनन्दिनी शुभ दीन हरखि मिथिलापुर आई ।
चन्द्र कोटि छवि विमल वसन लखि आनन्द उर न समाई ।।
नयन चकोर सरद विधुमण्डल एकटक रह्यो लगाई ।।
मोहित मधुकैटभ मद भंजनि सुरगण शक्ति समूले ।
महिष महारव सबल विपद लखि सुमन सुवरखहिँ फूले ।।
शोभाधाम कामना सुरतरु जनमन दायिनि चैन ।
मणिमय अजिर कनक गिरि वासिनि नाशिनि धूमर नैन ।।
चण्डमुण्ड सिर खण्डिनि भगवति रक्तबीज संघारि ।
शुम्भ निशुम्भ दनुज कुल नासिनि सिंहक पीठ सवारि ।।
सुर गन्धर्व दनुज गण किन्नर कर गोचर कर जोरि ।।
पाय अभयवर दहिन हाथ तुअ अति हर्षित चित मोरि ।।
तारा पद सरोज शरणागत सेवक संकर गाई ।
नित अभिनव मंगल मिथिलापुर घर घर बाजत बधाइ ।।
(मैथिल भक्त प्रकाश)

(२९)

श्रीश्यामा

जै जै जै महिषासुर मर्दिनि जगत विदित तुअ श्यामा ।
सुर मुनि आदि ध्यान नहि पाबथि अहनिश जप तुअ नामा ।।
विकसित वदन चिकुर चामर जनि चान तिलक शोभे माथा ।
मुण्डमाल बघछाल सम्हारिअ योगिनगण लिये साथा ।।
अरिदारिणि सुर पालनि भगवति सिंह पीठ असवारा ।

विविध रूप जग दुरित निवारिणि कारिनि असुर संहारा ।।
तीनि भुवन अनुपालिनि भगवति कमलनैन लखु ग्याने ।
छेमिअ छेमिअ शंकर अवगुण देहु चरण उर ध्याने ।।
(मैथिल भक्त प्रकाश)

जीवदत्त

(३०)

श्रीशंकरि

जय जय शंकरि ! सहज शुभङ्करि ! सपर भयङ्करि श्यामा ।
बाउरि वेश केश शिर फूजल शववाहिनि हर वामा ।।
वसन विहीन छीन छवि लहलह रसन दशन विकराला ।
कटि किङ्किणि शव-कुण्डल मण्डित उर पर मुण्डक माला ।
शृक बह लिधुर धार धरणी धर धरणीधर सम बाढ़ी ।
खलखल हास पास दुइ जोगिनि वाम दहिन भए ठाढ़ी ।।
कट कट कए कत असुर संहारल काटि काटि कैल ढेरी ।
घट घट लिधुर धार कत पीउलि मगमातलि फेरि फेरी ।।
विकट स्वरूप काल देखि काँपथि की पुनि असुर बेचारे ।
तुअ पद प्रेम नम जेहि अन्तर ताहि अमिअ रस सारे ।।
जीवदत्त भन शिव सनकादिक सभक शरण एक तोही ।
निर-अवलम्ब जानि करुणामयि ! करिअ कृतारथ मोही ।।
(मैथिली गीत रत्नावली)

बागीश्वर

(३१)

गोसाउनि

जय जय निर्गुण-सगुण तनु-धारिणि ! गगन-विहारिणि मा हे ।
कत कत विधि हरिहर सुरपति गण सिरजि सिरजि तोहेँ खाहे ।।
निगुण कहब कत सगुण सुनिअ जत ततमत कए रहु वेदे ।
थाकि थाकि बैसल छथि झँखइत, नहि पाबथि परिछेदे ।।
तोहरहि सँ सभ तन, तोहरहि सँ तन्त्र मन्त्र कत लाखे ।
केओ नारि तन, केओ पुरुष तन अपन अपन कए भाखे ।।
सुदृढ़ भक्ति रसवश तुअ अनुपम ई बूझिअ परमाने ।
भुक्ति मुक्ति वर दिअओ गोसाँउनि ! कवि वागीश्वर भाने ।
(मैथिल भक्त प्रकाश)

(३२)

श्रीदुर्गा

धरणिधर-वर शिखर-चारिणि दृप्त-दानव-दल-विदारिणि,
विधि विभावसु-वरुण-वासव-वन्दिते ललिते ।
शर-शरासन-पाश-धारिणि सतत-सङ्कुल-समर-कारिणि,
मातरङ्कुश-दलित-दुरित-प्रणत-परिकलिते ।।
जय देवि दुर्गे दुर्गवासिनि सादर-स्मित-सुभग-हासिनि,
भाल-बाल-मारल-निर्म्मल-चारु-चन्द्रकले ।
सुधासार-सरो-बिहारिणि चन्द्रिका-चयचारु-हारिणि,
श्रवण मण्डल लोल-कुण्डल-शोभि गण्ड-तले ।।
असित-पङ्कज-गर्व-गञ्जन नील-लोहित-हृदय-रञ्जन,
खाञ्जन-दुति-चोर-चञ्चल-लोचनप्रितये ।
मणि-मयूखावलि-विराजित कनक-नूपुर-राव-राजित,
चरण-निर्जित-मधुप-रूप-युत-सरसिज-द्वितये ।।
कृत-भवानी-चरण-वन्दन सुकवि पण्डित-राजनन्दन,
शङ्करार्पित गीत-तोषित-मानसे वरदे ।
पालया विनपाल-नायक- रूप-निर्ज्जित-पञ्चसायक,
मानसिंह महीशमीश प्रणति परिचय दे ।।

(मैथिली प्राचीन गीतावली)

श्रीकान्तगणक

(३३)

भगवती

जय जय भगवति जय जगदम्बे । तव पद नोर परम हित लम्बे ।।
करतलकृत करवाल विशाले । नव शशि भूषित सुललित भाले ।।
समर समित रिपु निकर कराले । चण्ड मुण्ड खण्डन जयमाले ।।
भुजगविभूषित लोहित वसने । विकट दशन लम्बित वर रसने ।।
सजल जलद इव पूरित तारे । वहसि कलित शत मणिमय हारे ।।
सुकवि गणक इह गायति गीत । तब चरणे मानसमुपनीतं ।।

(श्रीकृष्ण जन्म रहस्य)

रामनाथ

(३४)

गोसाउनि

जै जै जै भवसागर तारिणि तीनि भुवन तुहि माता ।
असुर मारि सुरपाल कारिणी भक्त अभयवर दाता ।।
काल रूप तुहिं काली उतपन सोनित करिय अधारे ।
सगर मेदिनि भरि रुधिर पसारल कैलहुँ असुर संघारे ।।
लोहित रसन दसन आउर बह लिधुर भुअंगम काया ।
सिंह चढ़लि रण फिरथि गोसाउनि करि देवन पर दाया ।।
रामनाथ भन सुनिये गोसाउनि मोरा गति नहि आने ।
जन्म जन्म तुअ चरण अराधिअ करिये मनोरथ दाने ।।

(मैथिल भक्त प्रकाश)

(३५)

जागहु हे जगदम्ब जननि मोरि, हरिए सकल दुख सारे ।
तुअ दरशन बिनु नैन विकल भेल, कखन देखब देवि तारे ।।
हम अबला अवलम्ब दोसर नहि, केवल तोहर भरोसे ।
तोहें जगतारिणि देहु एही वर, सेवक करहु परोसे ।।
हमर विकल मन धाव दसो दिसि, की गति होएत मोरे ।
अशरण शरण धयल हम तुअ पद, तोहरे चरण गति मोरे ।।
तोहें जगतारिणि शत्रु संहारिणि, सेवक होउ ने सहाये ।
हरषि हेरिय देवि सुदिष्ट नयन, भरि संकट करिय दराने ।
होउ प्रसन्न देवि पुरहु सकल मन, दीअ अभय वरदाने ।।

(मैथिल भक्त प्रकाश)

देवनाथ

(३६)

नील वरनी शम्भु घरनी छिरिक छवि जनु दामिनी ।
पाय नुपुर रजत किंकिणि सुनत सुर नर मोहिनी ।।
कठिन खड्गहिं लिये दुर्गे स्रवन झलकत टंकनी ।
अरुण नैना हसत वैना संग कोटिस योगिनी ।।
चन्द्र भाल भुजंग भूषित करहु असुर निखंडिनी ।
विन्ध्यवासिनि होउ दाहिनि सुनहु हे भव पारनी ।।
भूप से द्विपनाथ सुत देवनाथ सहित निवासनी ।।

(मैथिल भक्त प्रकाश)

जयकृष्ण **(३७)**

कालिका

जै कालिके स्वर्गधारिनि मत्त गजवर गामिनी ।
चिकुर चामर चन्दन तिलक चान सुमांगनी ।।
कनक कुण्डल गंड मण्डित संग नाच पिशाचनी ।
भौह भ्रमर कमान साजलि दसन जगमग दामिनी ।
अधर लाल विशाल लोचन शोक मोचनि शूलिनी ।
विकट आनन अति भयावनि हाथ खप्पर धारिनी ।।
योगिनी गण यूथ खलखल नाच-नाच पिशाचनी ।
श्याम तनु अभिराम सुन्दर बाज रुनुझुनु किंकिनी ।।
जंघ केदलि अंग कुन्तल पाद पद्म विभूषणी।
करजोरि जैकृष्ण करत गोचर शम्भुवाहिनि दाहिनी ।
हरषि हेरिअ तोहि शङ्करि त्वरित दुःख निवारिणी ।।
(मैथिल भक्त प्रकाश)

रामदास **(३८)**

प्रणमओ प्रणत कलपतरु रूप। देख मुनि बालहिँ अलष सरूप ।।
आशा सरित सँतारन सेतु । सुख सारथ पुरुषारथ हेतु ।।
मांगओ माए माहेश्वरि एह। अभिनव अभिनव यश मह देह ।।
हर वरतनु अनुचर भन राम। पुरिअ सुन्दर नरपति काम ।।
(आनन्दविजय नाटिका)

साहेबरामदास **(३९)**

श्रीसीता

जनकलली महिमा गुन भारी ।
चिन्तित कमल चरन ब्रह्मादिक परिहरि हृदय पदारथ चारी ।।
शुक सनकादि चरण रज चाहत ध्यान धरत मुनि कानन झारी ।।
शेष गनेस निगम गुन गावत भजत समाधि लाए त्रिपुरारी ।।
जीवन जन्म सुफल तोहि साहेब जे जन जगत भगति अधिकारी ।।
(साहेबरामदास गीतावली)

(४०)

चञ्चल मन सुमिरह वैदेही ।
सबे परिहरि सिय चरन सरन जेहि आवागमन होए नहि तेही ।
कोटि कोटि ब्रह्माण्ड के रानी तासें मुगुध नेह करि लेही ।

शिव सनकादि आदि ब्रह्मादिक चरण सरन रज चाहत जेही ।।
साहेब भजहु भरम तेजि दिढ़ भै आखिर भसम होइहैं देही ।।
(तत्रैव)

गोविन्ददास **(४१)**

श्रीराधा

जयति जय वृषभानु नन्दिनी श्याममोहिनि राधिके ।
कनक शतवान कान्त कलेवर किरण जित कमलाधिके ।।
सहज भंगिनि बिजुरि कत जिनि काम कत शत मोहिते ।
जेहनि फणि बनि वेणि लम्बित कबरि मालति शोभिते ।।
अंजन यंजन नयन रंजन वदन कत इन्दु नन्दिते ।
मन्द आज हाँसि कुन्द परकासि बिजुरि कत शत झलकिते ।।
रतन मन्दिर माँझ सुन्दरि वसन आध मुख झाँपियो ।
दास गोबिन्ददास प्रेम सागर सैह चरण समाधियो ।।
(गोविन्द गीतांजलि)

उमापति **(४२)**

जय जय मधुकैटभ अर्दिनी । जय जय महिषासुर मर्दिनी ।।
घूसरनयन भस्म मण्डिनी । चण्ड मुण्ड शिर खण्डिनी ।।
रक्तबीजासुर संहारिणि । शुम्भ निशुम्भ हृदय-दारिणि ।।
सभ सुर शक्ति रूप धारिणि । सेवक सबहुक उपकारिणि ।।
अनुपम रूप सिंहवाहिनि । सबहि समय रहिहह दाहिनि ।।
सुमित उमापति आशिष वानी । सकल सभा जय करथु भवानी ।।
(पारिजातहरण नाटक)

(४३)

श्रीछिन्नमस्ता

जय जय जय प्रचण्ड चण्डिके आदि शक्ति तुअ काली ।
ब्रह्म विष्णु शिव सकल भुवन भरि तुअ सिरजल ब्रह्माणी ।।
अष्टदल कमल उपर रविमण्डल तापर त्रिगुण सुरेखी ।
तापर रति विचरित मनमथ कर तापर पद तुअ पेखी ।।
लहलह रसन दसन अति चञ्चल विकट वदन विकराला ।
पीन पयोधर ऊपर राजित उरग हार मुण्डमाला ।।
उत्तम अङ्ग वह वाम पाणिकै दहिन कल्प धरि काँती ।
निज गल उछिल लिधुर मधुरिम छुबि जीविअ भलभाँती ।।
योगिनि युगल पास दुइ पोसल अरुण तरुण घनश्यामा ।

तीनि नयन तुअ जोति जगत भरि सहस्र भानु अभिरामा ।।
भाव शक्ति वर दिअ परमेश्वरि भुक्ति मुक्ति वरदाने ।
हिमगिरि कुमरि चरण हृदय धरि सुमति उमापति भाने ।।
(मैथिल भक्त प्रकाश)

रमापति (४४)

त्रिपुरेश्वरी

जय जय त्रिभुवनतारिणि देवि । सब अभिमत पुर तुअ पद सेवि ।।
जूटक बाँधि जटा धरु एक । तीनि नयन लोहित अतिरेक ।।
सिर सोभे अनुपम पञ्च कपाल । ससधर तिलक विराजित भाल ।।
विकट दसन अति-रसन अधीर । फणिमय भूषण खरब सरीर ।।
खरग काँति धरु दहिना हाथ । बामा इन्दीबर नर-नाथ ।।
नव यौवन उर पर मुण्डमाल । लम्बोदरि पहिरन बघछाल ।।
चउँदिस सतत फेरु कर सोर । चितिचय बास हास अतिघोर ।।
प्रनत रमापति कह जग जोहि । सब-बहिनि दाहिनि रहु मोहि ।।
(रुक्मिणी-परिणय नाटक)

(४५)

प्रनमओ भगवति पद अरविन्द । मानस हमर करिअ सानन्द ।।
जइओ सतत तुअ भगति विहीन । तइओ न उचित रहिअ हम दीन ।।
जओ कर तनय सहस अपराध । न कर जननि परिपालन बाध ।।
जदि तेजिअ मोहि पर-सुत जानि । जग जननी-पद तएह हानि ।।
अञ्जलि बाँधि निवेदिअ तोहि । हर गेहिनि परसनि रहु मोहि ।।
तुअ पद प्रणत रमापति भान । पतक हरिअ करिअ वरदान ।।
(तत्रैव)

(४६)

जय देवि गौरि मृगेन्द्र गामिनि । रुचिर तनु रुचि त्रिजित दामिनि ।।
दुरित खण्डिअ दिवस यामिनि । शम्भुकामिनि हे ।।
कइए तुअ पदकमल सेवा । निज मनोरथ सकल लेबा ।।
सेबि दुरगत रहल केबा । मनुज देबा हे ।।
गन्ध अक्षत कुसुम पानी । हमे निवेदिअ जत भवानी ।।
लिअ सकल परिवार आनी । भगति जानी हे ।
सदय लोचने मोहि निहारिअ । तोरित आपद सवे विदारिअ ।।
अपन किंकर गनि विचारिअ । रिपु संचारिअ हे ।।
बिसरि मने अपराध अछि जत । भइए परसनि पुरिय अभिमत ।।
भन रमापति कए प्रणति सत । चरन अनुगत हे ।।
(तत्रैव)

लालकवि (४७)

गौरी

जय हरिगमनी जय हरिगमनी देथु अभयवर हर रमनी ।
अति विकराल कपाल भाल मृग शोभित कच तट झलक मनी ।
लम्बित कच तर छपित छपाकर भुज पर भूषण भुजंग फनी ।
खप्पर वर करबाल ललित कर शुम्भ निशुम्भ दम्भवनी ।
रिपु भट विकट निकट झटपट कय धय पटकल चटपट अवनी ।
कुपित वदन पर नयन विराजित अरुण अरुण युग कमल सनी ।
लह लह रसन दसन दाडिमबिज निज गण जनमल दुख समनी ।
सुर नर मुनि हरखित सब सुनि हरि हर घर के तोहर सनी ।
रक्तबीज महिषासुर हारल असुर संहारल समर धनी ।
हमर कुमति तुअ पद पय गति बिसरिय जनु मोहि एको छनी ।
जगत जननि पद पंकज मधुकर सरस सुकवि यह लाल भनी ।
(गौरी स्वगंवर)

देवानन्द (४८)

दुर्गा

जय जय दुर्गे जगत जननी । दुर कर भव भए होह दहिनी ।।
खने नील खने सित निरमान । खन कुङ्कुम पङ्क तनु अनुमान ।।
राका विधुमुख नवविधु मराल । रक्त नयन सोभ केश कराल ।।
लोहित रदन लोहित कर पान । भृकुटि कुटिल पुनि मोन धेआन ।।
श्रुति भुजँ दस भुजँ हर दुःख मोर । ऋषिहि पुरान गनल भुज तोर ।।
करे वर अभय खड्ग जपमाल । मुकुर शूलधनु खेटक विशाल ।
न जानिअ आगमे तुअ कत रूप । तेतिस कोटि देव तोहि निरूप ।।
पुनि पुनि होइहो देवि गोचर लैह । नाग पास बन्धन मोक्ष दैह ।।
आनन्दे देवानन्द नति गाव । हरि चढ़ि रिपु हनि पूरह भाव ।।
(हिस्ट्री ऑफ मैथिली लिटरेचर)

गोकुलानन्द (४९)

भारती

जय जय भारति भगवति देवि। छने मुदित रहु तुअ पद सेवि ।।
चन्द्र धवल रुचि देह विकास । श्वेत कमल पर करहु निवास ।।
वीणारव रसिता वर नारि । सदत मगन गिरिराज कुमारि ।।
जन्म मरण नहि तोहि भवानि । त्रिदश दास तब त्रिगुणा जानि ।।

अरुण अधर बन्धूक समान । तीनि नयन विद्या वरदान ।।
गोकुल असुत सविनय मान । देहु परम पद दायक जान ।।
(तत्रैव)

कान्हाराम

(५०)

श्री दुर्गा

जै जै दुर्गा दुर्ग प्रताप । तुअ भुजबल डर दानव काप ।।
सिंह चढ़लि कर लेल कृपाण । कोपि चलल रण रूप भयान ।।
दानव दल दलि कैल औरान । पिउल रुधिर नहि भेल अघान ।।
रसन पसार दसन विकराल । ऐसन अरिदल कैल हत काल ।।
चण्ड मुण्ड रन खण्डल डारी । शुम्भ-निशुम्भ जुगल रण मारी ।।
महिष असुर रण कैल प्रकोप । ताहि निपाति कएल आलोप ।।
असुर निपाति सुरहि सुख देल । तुअ रणविजय विदित जग भेल ।।
कान्हाराम भन गोचर बानी । सदा सभा शुभ करिय भवानी ।।
(गौरी स्वयंवर नाटिका)

(५१)

कमला

जै जै कमला विमल तुअ वारि । विधु भगिनी जे उदधि कुमारि ।।
फोड़ि पहाड़ धार वह नीर । दरस परस जल हर सभ पीर ।।
ताल सरोवर खण्डन कारी ।------------------------------।।
(तत्रैव)

रत्नपाणि

(५२)

श्रीकालिका

जय जगजननि ज्योति तुअ जगभरि, दक्षिण पद युत नामे ।
अति द्युति पीन पयोधर उन्नत सजल जलद अभिरामे ।।
विकट दशन अति वदन भयानक फूजल मंजुल केशा ।
शोणित भय रसना अति लहलह श्रीकवयस्त्रिक देशा ।।
तीन नयन अति भीम राव तुअ अस दुइ कुण्डल काने ।
शवकर काटि सघन पाती कय चौदिश करि परिधाने ।।
मुण्डलमाल उर चारि भुजा तुअ खड्ग मुण्ड दुहु वामे ।
दक्षिण कर वर अभय विराजित गगन बसन बसु जामे ।।
शिव शव रूप दरश तुअ पदयुग सदा वास शमशाने ।
फेरव रवकर चौदिश शोभित योगिनि गण परिधाने ।।

रत्नपाणि भन अपरूप तुअ गति के लखि सक जगमाता ।।
मिथिलापतिक मनोरथ दायिनि सचकित हरिहर धाता ।।
(मैथिल भक्त प्रकाश)

(५३)

श्रीतारा

लम्ब उदर अति खर्व्व भीम तनु द्विप अजनि कटि देशा ।
अस्ति चारि षट् ता बिच खप्पर बाल भयानक केशा ।।
एक चरण अपर चरण लस से सित पंकज वासी ।
अति मृदुहास भास नव यौवन लखि रुचि शुचि सम भासी ।।
दक्षिण बाहु दुइ षड्ग कत्तृ लस रिपु शिर उत्पल वामे ।
भुवि अक्षोभ्य भाल पर शोभित लहलह रसन सुकामे ।।
प्रात समय रवि बिम्ब त्रिलोचन दन्तुर दन्त विकासे ।
ज्वलित चिता चौदिश धहधह करु ततय देवि तुअ वासे ।।
पिङ्गल जटाजूट शिर शोभित वेदबाहु अति भीमा ।
अनुपम चरित चकित सुर नर मुनि के कहि सक तुअ सीमा ।।
रत्नपाणि भन तुअ पद सेवक तारणि सुनु अवसेषे ।
श्रीमिथिलेशक सतत करिअ शुभ ताहि न करिअ विसेषे ।।
(तत्रैव)

(५३)

श्रीत्रिपुरसुन्दरी

जय शिशुभानु अयुत तेजोमयि त्रिपुरसुन्दरी देवी ।
तीनि भुवन धन्या तोहि सब कह जकर पुरन्दर सेवी ।।
कति विधि अतिरत आरत युत तनु बाल कलाकार भाले ।
अरुण वसन विलसित तुअ भगवति देवि त्रिलोचन बाले ।।
सम सर पास धनुष इषु-दण्डक सृणि शोभित कर चारी ।
श्रीयुत चक्र विराजित तुअ पद कमल भक्त भयहारी ।।
आगम निगम विदित तुअ महिमा के कहि सक अवसेषी ।
तुअ भय जगत भगत भवकारिणि की मत करत विसेषी ।।
रत्नपाणि तुअ चरण सरोरुह सभक करिअ अभिलाषे ।
मिथिलापतिक सतत करु मंगल की कहब गोचर लाषे ।।
(तत्रैव)

(५५)

श्री भुवनेश्वरी

जय भुवनेसि भीति भय भञ्जनि भगवति भूषित देहा ।
श्याम जलद अभिराम चिकुर चय लसत भाल शशि रेहा ।।
उदय समय रवि बिम्ब अरुण छवि नयन तीनि तुअ भासे ।
सिरमय जड़ित किरीट विराजित मुख सुषमा मृदु हासे ।।
वाम उपरकर लसय अभय वर नीच बीच कर धन्या ।
दहिन उपरकर अंकुस तसु अध पास भास गिरि कन्या ।।
भूपर भवन वृत्तिदल षोड्स ता बिच वसु दल कञ्जे ।
ताहि बिच उपर तुअ पद युग कमल ध्यान भय भञ्जे ।।
तुअ तनु रचन वचन गोचर नहि थकित शम्भु जगदीशा ।
भगत मनोरथ वस तुअ तनु वचन वेआपित ईशा ।।
रत्नपाणि भन सुनिय सुमन भय करुणा करु जगमाता ।
पुरिय मनोरथ श्रीमिथिलेशक तुअ यश भव निरमाता ।।
(तत्रैव)

(५६)

श्री भैरवी

अयुत उदित रवि रुचिर देह छवि अरुण पाट पट भासे ।
रिपु शिर निकर माल उर शोभित दश दिश ज्योति विकासे ।।
रुधिर लेपमय पीन पयोधर मुख अरविन्द समाने ।
शशिधर रत्न मुकुट शिर शोभित मृदुल हास परधाने ।।
पुस्तक अभय अक्ष जपमाला वर कर चारि निधाने ।
निज जनि शंकरि असुर भयंकरि श्री भैरवि तुअ ध्याने ।।
विषय विषम रस हृदय देवि पद भज तन धरत ने ज्ञाने ।
भुवन भुवन तसु उदित सुकृति वसु से जन भव पर ध्याने ।।
जगत जननि विनती कछु सुनिए रतनपाणि भन दासे ।
श्रीमिथिलेसक हृदय वास करु पुरिय तासु सभ आसे ।।
(तत्रैव)

(५७)

श्रीछिन्नमस्ता

जय जगज्योति जगत गतिदाइनि चिकुर चारु रुचि भाले ।
परम असम्भव सम्भव तुअ वर पीन पयोधर वाले ।।
कमलकोष रविमण्डल ता विच त्रिविध त्रिकोणक रेषा ।
ता विच रति विपरीत मनोभव सुषमा सरित विशेषा ।।
पद आरोपित पत्र लस तापर अरुण भान शशि रेहा ।
उर सविशाल भाल रिपु मुण्डक फणि उपवीत सुरेहा ।।
दक्षिण कर करवाल वाम कर निज शिर अति विकराले ।
लहलह रसन दशन कटकट कर फूजल केश विशाले ।।
निज गण कलित उपर कय रुधिरक धार तीन बह धीरे ।
दुई दुई योगिनि पिबय दुऊ दिश निज मुख एक सुथीरे ।।
रत्नापाणि निज सेवक जानिए मानिए देवि निहोरा ।
मिथिलापतिक सतत करु मंगल धन धरु गोचर मोरा ।।
(तत्रैव)

(५८)

श्रीधूमावती

जय धूमावति जगत विदित गति श्याम रुच्छ तनु भासे ।
फूजल चिकुर निकर अति लंबित तनु अनु छवि आकासे ।।
कलह प्रेम अनुखन तोहि भगवति अम्बर मलिन शरीरे ।
दसन विकट अति विशद विरल गति स्वेद वहय तनु धीरे ।।
क्षुधित सतत मन रुच्छ त्रिलोचन कुक्ष सूप सन तोही ।
तरल सुभाव दुसह मन अनुखन जन उद्वेगन मोही ।।
वायस रथ तुअ देदि त्रिलोचन वास रुचय रामसाने ।
कउखन सुन्दरि अनुपम रुचि धरि कउखन परम भयाने ।।
रत्नापाणि भन हरिय मुदित मन निज सेवक मोहि जानि ।
सदा करिअ मिथिलेशक मंगल गोचर सुनिय भवानि ।।
(तत्रैव)

(५९)

श्रीबगलामुखी

जय बगलामुखि अमृत सिन्धु बिच मणि मण्डप निधि देवी ।
ता बिच रत्न सिंहासन ऊपर तुअ पद लस भय भेदी ।।
पीत वसन तुअ पीत विभूषण पीत कुसुममय माला ।
फूजल चिकुर निकर दुइ लोचन दुखमोचनि हरबाला ।
वाम हाथ रिपु रसन रक्तमय दहिन गदा अभिरामा ।
अनुगत जन जयकारिनि सुररिपु मर्दिनि पूरनकामा ।।
कुण्डल लसित गण्ड मण्डल युग चण्ड भानु युग जोती ।
विपति विदारिनि रिपु मद हारिनि दन्त विराजित मोती ।।

श्रीमिथिलेशक करु जय देवी पुरित करु सभ आसे ।
रत्नपाणि गोचर करु भगवति करु मम हृदय निवासे ।।
(तत्रैव)

(६०)
श्रीमातंगी

कीरक सम रुचि स्याम सुतनु लस माणिक भूषित देहा ।
शिशु शशि भाल माल मुक्तामणि हासमुखी शुभ गेहा ।।
निज पद विनत विभव वरदायिनि तीनि नयन तुअ भासे ।
सुर मुनि आदि सकल जन सेवित चरण विजित परवासे ।।
कटुक सुवास पान आरतमुख कर वर राजय बीना ।
रत्न सिंहासन ऊपर राजित षोड़स बैस नवीना ।।
दहिना हाथ दुऊ असि अंकुश लस पास सुखेटक वामे।
अष्ट सिद्धि मयि सिद्धि सरूपा मातंगी जसु नामे ।।
मिथिलापतिक पुरिय अभिलाषा निज पद नत अवलम्बे ।
रत्नपाणि तुअ पद युग सेवक गोचर करु जगदम्बे ।।
(तत्रैव)

(६१)
श्रीमहालक्ष्मी

जै कमला कमलायत लोचनि भव भय मोचनि कन्या ।
घन रुचि कुच चामी कर तनु रूचि चारि भुजा अतिधन्या ।।
चारु किरीट विराजित मस्तक धारिनि पाटक चीरे ।
लसय वराभय कर दूई दुह पद्मयुगल सुधीरे ।।
चारि कनकघट भरल सुधारस अमृत गज कर लाए ।
वाम दहिन भय सिञ्चित कर मुख कमल मनोहर जाए ।।
मणिगण जटित लसित भूखण। तनु करुणा करु जगमाता ।
शंकर किंकर इन्द्र आदि सुर सेवक जनिक विधाता ।।
पंकज आसन परम विकासन ताहि उपर लस देवी ।
रत्नपाणि तसु ध्यान मगन मन श्रीमिथिलेशक सेवी ।।
(तत्रैव)

(६२)
श्रीमहासरस्वती

दनुज दलित दुर्गे भयहारिणि जय पूरित मनकामे ।
शुम्भ निशुम्भ निसूदिनि भगवति महासरस्वति नामे ।।

घन रुचि केश भेष अति शोभित आनन आनन्द कंदा ।
तीनि नैन छवि अतिहि विराजित भालब्याल तनु चन्दा ।।
सूल शंखरथि अंक वाण तुअ दहिन भाग कर चारी ।
घऽन हल पुनु मुसल सराशन वाम भाग कर धारी ।।
अनुगति शंकरि असुर भयंकरि सारद शशि सम देहा ।
बाहन सिंह लसै तुअ अनुपम निज जन परम सिनेहा ।।
रत्नपाणि कर पुट कय जाचति सुनिये देवि मन लाई ।
मिथिलापुर के पुरिये मनोरथ निसदिन रहिये सहाई ।।
(मैथिल भक्त प्रकाश)

(६३)
देवी श्रृंगार

सकल श्रृंगार सुभग शुभ वेशा। नृप गृह देवि कयल परवेशा ।।
दिन दिन मंगल कारिणि धन्या । सिंह चढ़ल राजै गिरिकन्या ।।
शारद चंद सुरुचि चय देहा । कृपा विलोचनि भक्त सिनेहा ।।
क्षमा करिअ निज जन अपराधे । त्रिभुवन तारिणि शील अगाधे ।।
रत्नपाणि कर गोचर आजे । सतत परिय मिथिलेशक काजे ।।
(तत्रैव)

(६४)
देवीक आरती

शुभ आरति जगदम्ब तिहारी । देखि समूह गिरिराज कुमारी ।।
दीपक दीप पंचमुख धारी । ता मँह घृत कर्प्पूर सम्हारी ।।
वीरा जनमन करत विचारी । प्राप्त समय अति सम सुखकारी ।।
शिव विरंचि सनकादि मुरारी । कर आरति तुअ जगत विचारी ।।
रत्नपाणि फल चाहत चारी । देहु जननि फल अति शुभकारी ।।
(मैथिल भक्त प्रकाश)

(६५)

सुमरि दुर्गाचरण-सारस भजिअ मानस लाए ।
पुरन हे सखि कामना तुअ गौरी भक्त सहाए ।।
देवता सभ विपति पड़ि गेल तखन कएल विचार ।
भजिअ सभ मिलि देवि दुर्गे आन नहि परकार ।।
तखन सुरसरि तीर गए कह सखि अराधन भेल।
छुटल सभ दुख मोदमय भए भवन निज सभ गेल ।।
एहि उत्तर चित्रलेखा कएल दुर्गा भक्ति ।
गगन वाणि तखन भए गेल काज साधन शक्ति ।।

रत्नपाणि विचारि भाखथि सुनिअ करिअ विचार ।
सतत दुर्गा चरण सेविअ आन नहि परकार ।।
(हिस्ट्री ऑफ मैथिली लिटरेचर)

भानुनाथ **(६६)**

जय जय त्रिभुवन सुन्दरि भगवति कृत बहु विध वर रूपे ।
सिन्दुर पूर रुचिर तुअ अम्बर त्रिनयन वलित अनूपे ।।
अरुण सरोरुह निहित चरण युग विहित वाल शशि भाले ।
ललित चतुर्भुज कलित अभय वर पुस्तक विरचित माले ।।
तरुण वयस शिशु दिनकर रुचि तनु सतत पुरित मुख हासे ।
सुरगुरु सुरपति दुनुहुँ तुलित भेल जे जन तुअ पंगु दासे ।।
त्वरित दुरित चय भारनिकन्दिनि रचित मनोरम हारे ।
धरम करम उपगत रह ये जन तनिक परम सुख सारे ।।
आगम विलिखित तुअ गुन गाओल विमल नृत्य दिअ दाने ।
सकल सभा जय करु परसनि भय भानुनाथ कवि भाने ।।
(प्रभावतीहरण नाटक)

(६७)

वलित चञ्चल चारू लोचनि भय विमोचनि सदय भगवति हे ।
रुचिर भूषण तनु विभूषित बिन्दु विलसित हनुमति हे ।।
हरविहारिणि मुक्ति कारिणि भगततारिणि सुर शुभङ्करि हे ।
गिरिनिवासिनि शुम्भनाशिनि बलिपलाशिनि रिपु भयङ्करि हे ।
चक्र शूल कृपाण शरधनु कुलिश तोमर उरग धारिणि हे ।
सिंहवाहिनि विभवदायिनि परमभाविनि महिषदारिणि हे ।।
बदनलोहित देहशोभित कयल मोहित सकल अरिदल हे ।
स्फुरित चाप निनाद सुनि सुनि त्वरित हरषित पड़ल निजवल हे ।।
भानुनाथ सुदान माङथि सङ्ग कय तोहि नयन हुत भुग हे ।
श्रीमहेश्वर सिंह भूपति सुत विनोदित जिवथि युग-युग हे ।।
(तत्रैव)

हर्षनाथ **(६८)**

श्री सरस्वती

जय जय कुमति विनाशिनि देवि । सभ अभिमत पुर तुअ पद सेवि ।।
तनु रुचि निन्दित कुन्दक भास। आनन रुचि शशि बिम्ब उदास ।।
आसन धवल कमल शशि भाल । श्वेत वसन लस नयन विशाल ।।
वीणा दण्ड कलश धर हाथ । जपमाला वर पुस्तक साथ ।।

हर्षनाथ कवि मनदय भान । भगवति करिय अभय वरदान ।।
(उदाहरण नाटिका)

(६९)

श्रीदुर्गा

जय जय महिष विनाशिनि भगवति सिंहगमनि जगदम्बे ।
त्रिभुवनतारिणि विपदनिवारिणि सकल भुवन अवलम्बे ।।
त्रिदश तपोधन दनुज मनुज गण चिकुर निकल अभिरामे ।
तुअ पद चिन्तन विमुख सतत मन किदहु होएत परिणामे ।।
हमर दुरित मति जानि सकल गति करिअ न अतिशय रोषे ।
तनय रहित मति करय अनत गति कहिअ कुकर थिक दोषे ।।
तुअ गुण निगम अगम हरिहर विधि कहि न सकथि अनुपामे ।
अनेक जनमं तप करथि जतन दय तुअ पद दरशन कामे ।।
क्षमिय हमर अपराध कृपामयि करिअ अभय वर दाने ।
गिरिनन्दिनी पद पङ्कज मधुकर हर्षनाथ कवि भाने ।।
(तत्रैव)

(७०)

जय जगजननी जय जगजननी देहु सुमति मृगपति गमनी ।
सरसिरुहासन विपदविनाशन कारिणि मधुकैटभदमनी ।।
दिति सुत रञ्जन सुरगणभञ्जन महिष महासुर बलदलनी ।
त्रिभुवनतारिणि महिषविदारिणि धूसर नयन भसम करनी ।।
चण्ड मुण्ड सिर खण्डनकारिणि उनमतरक्तबीज शमनी ।
अतिबल शुम्भ निशुम्भ विनाशिनि निजजनसकल विपद हरनी ।।
तुअ गुण निगम अगम चतुरानन कहि न सकत कत सहस्रफणी ।
अमर निशाचर दनुज मनुज शिर चिकुर कलित जित रकतभनी ।।
तुअ पद युगल सरोरुह मधुकर हर्षनाथ कवि सरस भनी ।।
(माधवानन्द नाटक)

(७१)

श्रीवनदुर्गा

जय जय विन्ध्यनिवासिनि । तनु रुचि निन्दित दामिनि ।।
आनन शशधर मण्डल । तीनि नयन श्रुति कुण्डल ।।
कनक कुशेशय आसन । वसय निकट पञ्चानन ।।
शंख चक्र निरभय वर । कर धरु शशधरशेखर ।।
तुअ पद पङ्कज मधुकर । हर्षनाथ भन कविवर ।।
(हर्षनाथ काव्य ग्रन्थावली)

(७२)
श्रीतारा

जय जय भयहरनि, मञ्जुहासिनि, मधुदमन कञ्जआसनि,
शिवसेवित पद कमल तारिणी ॥
नवल जलद मञ्जु भास, ज्वलित प्रेम भूमिवास,
मुण्डमाल अति विलास विपदहारिणी ॥
तीन नयन अरुण वरन, विश्वव्यापि सलिल सरन,
ललित धवल कमल युगल चरणधारिणी ॥
लम्ब उदर खार्व रूप द्वीपि अजिन कटि अनूप
चपल रसन विकट दसन दुरित दारिणी ॥
मुद्रापञ्च लसत माथ, खड्ग कांति दहिनं हाथ,
बाम मुण्ड कुबल मौलि अक्षौभधारिणी ॥
भनत हर्षनाथ नाम, जनक नगर नृपति काम,
पुरिअ परम करुणधाम भक्ततारिणी ॥
(हर्षनाथ काव्य ग्रन्थावली)

चन्दा झा (७३)

जय देवि महेश-सुन्दरी । हम छी देवि अहाँक किङ्करी ॥
शिव देह निवास कारिणी । गिरिजा भक्त-समस्त तारिणी ॥
हम गोड़ लगैत छी शिवे । जननी भूधरराज-सम्भवे ॥
जनता-मन-ताप-नाशिनी । जय कामेश्वरि शम्भु लासिनी ॥
महादेव रानी सती श्री मृडानी । सदा सच्चिदानन्द रूपा अहैँ छी ।
अहाँ शैल राजाधिराजाक पुत्री । धरित्री सावित्रीक कर्त्री अहैँ छी ॥
अहाँ योगमाया सदा निर्भया छी । दया विश्व चैतन्य रूपे रहै छी ।
सदा स्वामिनी सानुकूला जतै छी । धनुर्भङ्ग चिन्ता ततै की सहै छी ॥
अपने काँ हम गौरि की कहू । अनुकूला जनि मे सदा रहू ।
हमरा जे मन मध्य चिन्तना । सबटा पूरब सहै प्रार्थना ।
(रामायण)

(७४)

रहू देवि दासी-विषय सहाय ।
जय जय जगदीश्वर-वामाङ्गी जय जय गणपति-माय ॥
अतिशय चिन्ता मन मे छल अछि नृपति कठिन पण पाय ।
दरशन देल भेल मन-वाञ्छित चिन्ता गेलि मेटाय ॥

सकल सृष्टि कारिणि जगतारिणि महिमा कहल न जाय ।
जगदम्बा अनुकूला अपनहि हम की देब जनाय ॥
रामचन्द्र सुन्दर वर जै विधि होथि महीप-जमाय ।
जय जय जननि सनातनि सुन्दरि तेहन रचब उपाय ॥
(रामायण)

(७५)

से करु देवि दयामयि हे, थिर रह महराज ।
पूरिअ हमर मनोरथ हे, केकयि नहि बाज ॥
नृपतिक हृदय ककर वश हे, ककरो नहि मीत ।
सौतिनि सामरि साँपिन हे, मन हो भयभीत ॥
तुअ शंङ्करि हम किङ्करि हे, यावत रह देह ।
तुअ पद कमल नियत रह हे, मोर अचल सिनेह ॥
रामचन्द्र सीतापति हे, होयता युवराज ।
त्रिभुवन आन एहन सन हे, नहि हित मोर काज ॥
(रामायण)

(७६)
श्रीश्यामा

जय दिग्वसना ॥ फूजल चिकुर विकट दशना ॥
प्रलय पयोद कान्ति धरानन जय जय अट्टहास व्यसना ॥
तन छन छिन्न मुण्ड असि निर्भय वर कर लह लह लह रसना ॥
नर कर कृत काञ्ची मुण्डावलि धरा असुर विग्रह ग्रसना ॥
शोणित पान वदन सौं निस्सृत विरतृत नियत धार लसना ॥
तुअ उर दिनकर हिमकर ग्रहगण समन सतत वहै स्वसना ॥
'चन्द्र' चूड़ क्षेमङ्करि श्यामा जय जय काल विभव अशना ॥
(चन्द्र रचनावली)

(७७)
श्री गौरी

जय जय गिरिवर नन्दिनि त्रिजगत वन्दिनि हे ।
जय जय जनभय भंजिनि असुर निकन्दिनि हे ॥
जय जय मृगपति चारिणि दुरित विदारिणि हे ।
महिष महासुरमारिणि शिव व्रसकारिणि हे ॥

जय जय मङ्गलदायिनि सुकृत विधायिनि हे ।
शंकर हृदय सरोजनाद दसगायिनि हे ।।
गौरी गुणाकर देवि सेवि सुख पावथि हे ।
अखिल मनोरथ पूर चन्द्रगुण गावथि हे ।।
(तत्रैव)

(७८)

श्रीमहेश्वरी

मैया महेशी कलेश हरु मोर, त्यागू ने देवी उदारपना ।
वाणी अहाँ छी सची छी अहाँ, हरिलक्ष्मी अहीं छी अनन्तघना ।।
पालै छी त्रिश्व चराचर कै पुनि घालै छी दानव दैत्य गना ।।
मायासौं मोहित लोक करी पुनि विद्या अहीं छी आनन्दघना ।।
तंत्र ने जानी ओ मंत्र ने जानी कुकर्मपनामे ने मानी मना ।।
भारी भरोस अहेंक सदा दया देखू करु कविचन्द जना ।।
(तत्रैव)

(७९)

श्रीश्यामा

तोँहीँ गौरी तोँहीँ वाणी तोँहीँ रमा महारानी ।
पूजा पटल एक न जानी करम दोषे पतित प्रानी ।।
तोँहीँ पुरुष तोँहीँ नारी तोँहीँ थावर जंगम चारी ।
तोँहीँ अनल तोँहीँ वारी तोँहीँ पवन धरणि धारी ।।
हमर दूषण क्षमा करब भगति भावे हृदय भरब ।।
भक्तक सकल सङ्कट हरब संसार सागर तैं हम तरब ।।
करह दया देवी श्यामा कुशल राखह सब्रहि ठामा ।।
दुर्जन मण्डलि करह क्षमा गोचर करथि चन्दा नामा ।।
(चन्द्र रचनावली)

(८०)

श्रीदेवी

जौं मोर विनति धरब देवि कान ।
तों मोर एक विपति नहि अनुभव सतत रहत कल्यान ।।
शान्ति स्वभाव दैव नहि देलनि पाप पटल परधान ।
उदरम्भरि भरि जनम कहाओल त्याग नै पतितक दान ।।
वृद्ध वयस किछु साधन सिद्धि न वञ्चक मे बलवान ।

एहन पतितकैँ के धुरि ताकत अम्बा तुअ बिनु आन ।।
कह कविचन्द्र मन्द कलिकाल मे पापी हमर मान ।
प्रायः केओ देखि नहि पड़इछ हमर प्रबल अज्ञान ।।
(तत्रैव)

(८१)

श्रीसीता

तुअ बिनु आज भवन भेल रे, घन विपिन समान ।
जनु ऋषि सिधिक गरुअ भेल रे, मन होइछ भान ।।
परमेश्वरि महिमा तुअ रे, शिव विधि नहि जान ।
मोर अपराध छमब सब रे, नहि याचब आन ।।
जगत जननि का जग कह रे, जन जानकि नाम ।
नैहर नेह नियत नित रे, रह मिथिला धाम ।।
शुभमयि शुभ शुभ सब दिन रे, थिर पति अनुराग ।
तुअ सेवि पुरल मनोरथ रे, हम सुखित सुभाग ।।
(रामायण)

(८२)

श्रीगंगा

गंगा तुअ महिमा कहल नहि जाय हे। शंभु माथा राखल चढ़ाय हे ।।
पतित उधार नहि दोसर उपाय हे । सुयश पताका तुअ जग फहराय हे ।।
वेद ओ पुरान गण देलनि सुनाय हे । तुअ तट सेवितहिँ निरमल काय हे ।।
चन्द्र कवि कर जोड़ि कहथि सुनाय हे । अन्त नै बिसरू मोरा सुरसरि माय हे ।।
(चन्द्र रचनावली)

(८३)

छमब सकल देवी मोर कृत दोष हे । नै करिय सुरसरि शिशु पर रोष हे ।।
तुअ बल केवल हृदय भरि पोष हे । धयल शरण सुनि सुजस सुबोध हे ।।
की करत सञ्चित अनन्त रत्नकोष हे । की करत पामर सहससत तोष हे ।।
करु करु गंगा देवी मोरा निरदोष हे । चन्द्र मन हो निराश यम कोप चोष हे ।।
(चन्द्र रचनावली)

(८४)

श्रीकोशिका

जय गाधिसुते, जय जय कौशिकि देव सुते ।।
जय जय विश्वामित्र सहोदरि जय जय सकल लोक महिते ।

मिथिला पूर्व सम संस्थायिनि जय जय सकल सगुण सहिते ॥
पाहि पाहि परमेश्वरि मामिह सुरसरिता साकं मिलिते ।
तीव्र तरंग सुततिभिर्ल्ललिते जय जय चपलवेग चलिते ॥
जय जय चन्द्रक वेर लघनाशिनि जय जय देवि कलुष रहिते ।
पापराशि विध्वंसिनि सततं जय जय निज जन परम हिते ॥

(तत्रैत)

(८५)

कमला

हे दयामयि होउ सहाय । लक्ष्मी सरूपा तोहँ कमला माय ॥
तुअ जल सभ जन भक्ति सौँ नहाय । बिन श्रम सुखित सरगपुर जाय ॥
निर्मल अमृत जल दरशन पाय । नित दिन तिरहुति पाप नशाय ॥
सत्वर करु देवि तेहन उपाय । शिवक चरण 'चन्द्र' मन लपटाय ॥

(चन्द्र रचनावली)

कान्हरदास

(८६)

गंगा

जय गंगाजी जगजननी, जय सन्तन सुखदाई ।
चरण कमल अनुराग भागसौ, लय ब्रह्मा उर लाई ॥
चारि पदारथ अछि जगजीवन, वेद विमल जस गाई ।
भक्त भगीरथ उनके कारन, प्रगटि अवनि मँह आई ॥
तेज प्रताप कहाँ धरि बरनब, शंकर सीस चढ़ाई ।
हेम-शिखर पर ललित मनोहर उर जयमाल सोहाई ॥
ताकर नाम लेत जम किंकर करुणा करु फिरि जाई ।
राम नाम गंगा कलि केवल, दास और ने उपाई ॥
'कान्हरदास' आस रघुवर के हरखि निरखि गुनगाई ॥

हिन्दी साहित्य और बिहार, भाग-2, राष्ट्रभाषा परिषद्

जलपादत्त

(८७)

हेमन्त-किशोरी

जननि ! अब जनु होइअ भोरि ।
पूजा ध्यान एकओ नहि जानिअ, तोहर चरण गति मोरि ॥
सुत अपराध कोटि जँ करइछ, माता होए न कठोर ।
जओं मोर दोष लिखल बसुधा भरि, उदधि करिअ मसि घोरि ॥

सब विधि आस राखल देवि तोहर, सुनु-सुनु हेमंत-किसोरि ।
जलपादत्त विनति करु भगवति, तोहे देवी अधम उधोरि ॥

(हिन्दी साहित्य और बिहार भाग-2)

दास

(८८)

सुरसरि

जन के पीर हरे, सुरसरि हे ।
देशदेश केर यात्री आएल, दर्दर-क्षेत्र भरे ॥
सरयू आबि मिललि संगम भय, त्रिकुटी स्थान घरे ।
ब्रह्म कमंडलु जटा शंकरी, विष्णुक चरण परे ।
सेवा कय भागीरथ लायल, पतित अनेक तरे ।
धम्मंक देनी पापक छेनी, सन्तक चरण परे ॥
सकल पतित कें तारल गंगा 'दास' किएक ने तरे ॥

(तत्रैव)

चिरञ्जीव

(८९)

जय काली जय तारा भुवना, षोडसी मन भाबै ।
धूमावति भजु बगला छिन्ना, भैरवी सुख पाबै ॥
मातंगी भजु कमला माता, लक्ष्मीरूप कहाबै ।
दुर्गा दुर्गति नाशिनि गिरिजा, चण्डी रूप जनाबै ॥
चामुण्डा भजु कौशिकी दयानी, महामोह मेटि जाबै ।
कामख्या भजु विन्ध्यवासिनी, ज्वालामुखि जग भावै ॥
गुह्यकालि मीनाक्षी विमला, मंगल गौरि देखाबै ।
राजेश्वरि सिद्धेश्वरि सीता, गंगा गंडकि राबै ॥
कौशिकि कमला वाग्वति भजिले, चिरंजीव द्विज गाबै ॥

(तत्रैव)

नरसिंहदत्त

(९०)

दुर्गा

दुर्गा लेखा दय दय तोर ।
तीनि तीनि कय दय दय दुर्गा, लेखा दय दय तोर ॥
नन्द तेरो तात यशोदा, गुरूजन तेरो भ्राता ।
और पद छाडि तुअ पद सेविय, ताकर ऊपर मोती ।
अङ्ग-अङ्ग जे ज्योति विराजय, सोती मोती मोती ॥

कुण्डल डोलय बेसरि लोलय, कटि किंकिणियाँ बोलय ।
दत्त नरसिंह भवानी तेरो, डोलय लोलय बोलय ॥
(तत्रैव)

श्रवणसिंह **(९१)**

चण्डिका

जय कमलनयनी कमल कुच युग, कमल चँवरनि शोभिता ।
कमलपत्र सुचरणराजित, दैतयदल मंद गञ्जिता ॥
अष्ट भुजबल महिष मर्दिनि, सिंहवाहिनि चण्डिका ।
दाँत खटखट जीभ लहलह, श्रवण कुण्डल शोभिता ॥
शूल-कर अरधङ्ग शंकरि, नाम आदि कुमारिका ।
''श्रवण सिंह'' प्रसाद मांगथि, उचित दिअ वर देविका ॥
(तत्रैव)

भैअनि देवी **(९२)**

दुर्गा

जय जय दुर्गे अनुपम रूपे, नाम उदित जगदम्बे ।
तुअ पदपङ्कज सेवि चरण मन, दोसर नहि अवलम्बे ॥
तुअ गुणवाद करय के पाबय, लिखि नहि सकथि महेशे ।
निर्गुण भय सगुण करु धारण, बिहरथि भगन अकाशे ॥
''भैअनि देवी'' गहल चरण युग, हरु न हमर दुख भारे ॥
(तत्रैव)

आदिनाथ **(९३)**

नहि जग बाहर हम जगतारिणि तोहे जगदम्ब भवानि ।
परपुत जानि मोहि ज्यों त्यागब जगजननी पद हानि ॥
ज्यों सुत करत अनेक उपद्रव जननि छमति सब दोषे ।
रोख बिसारि माय प्रतिपालति पुत्र करत अमरोषे ॥
तुअ प्रेरित हम करिय अहोनिशि ते नहि मोर अपराधे ।
तुअ माया तहँ मेटि पाप सभ आनक किछु नहि साधे ॥
तोहर भरोसे धैल हम सभ खन तुअ बल मन अवधारि ।
तुअ प्रताए हम शत्रु मारि जग सुख भोगब शिवनारि ॥
पूरित करिय अभिलाख निरन्तर दै पद भक्ति उपाम ।
आदिनाथ पै कृपा करिय नित दाहिनि रहु सब ठाम ॥
(मैथिली भक्त प्रकाश)

(९४)

हम अति विकल विषय रस मातल भगवति तोहर भरोसे ।
अशरण शरण हरण दुख दारिद तुअ पद पङ्कज कोशे ॥
विधि हरि शिव शनकादिक सुरमुनि पाबि मनोरथ दाने ।
तुअ गुण यश वरणन कर अनुछन वेद पुराण बखानें ॥
जे तुअ साधक पुरल तनिक मन अवसर आएल मोरा ।
अरु अभिलाख सतत वरदाइनि करिय विनय कछु तोरा ॥
आदिनाथ पद कृपा युक्त भय निशि दिन करु कल्याणे ।
सुत सम्पत्ति सुख मुद मङ्गल दै चारि पदारथ दाने ॥
(तत्रैव)

(९५)

भगवति तुअ पद पिंजर जान । वसत हमर मन हंस समान ॥
तुअ पद कंज विनिन्दित कंज। मोर मन मधुकर वस अनुरंज ॥
तुअ पद युग चिंतामणि तूल। मोर मन याचत भक्ति समूल ॥
आदिनाथ कहि कहु परमान ; आदि सनातन करु कल्याण ॥
(तत्रैव)

(९६)

भगवति पद पंकज युग ध्यावति विधि हरिहर सुर राजे ।
जग पूजित सभ लोक विदित भेल साधन निज निज काजे ॥
तुअ वर पाबि भेल अतिबल सुर भोगत निज निज काजे ।
अजय अमर भै कामरूप धै दिख दलि अति छवि छाजे ॥
तुअ बल पाबि चराचर मुनिगण महिमा अतुल विराजे ।
आगम निगम तन्त्र मन्त्र मय नारि पुरुष तुअ साजे ॥
आदिनाथ प्रति करिये दाया नहि तो हसत समाजे ॥
कृपा युक्त भै पालिय निशिदिन नहि तो तोहरे लाजे ॥
(तत्रैव)

(९७)

भगवति चरण कमल युग रे सेवल सुखदाई ।
मोर मानस भेल मधुकर रे लुबुधल मन लाइ ॥
विधि हरिहर नित सेवल रे श्रुति सम्पति जाने ।
चारि पदारथ लहि लहि रे हृदय धरत ध्याने ॥
जे जन समुरिय निश दिन रे तसु पूरन कामा ।
विपति दूरि सुख उपगत रे पालति शिव-वामा ॥

नाम जपत मुद मंगल रे नाशत अज्ञाने ।
आदिनाथ रहु दायिनि रे दै दै वरदाने ॥
(तत्रैव)

(९८)

भगवति तुअ पद ललित मनोहर कमल युगल छवि छाजे ।
चम्पकली अंगुलि अति सुन्दर नख दुति चन्द्र विराजे ॥
एड़ी ललित इन्द्र वारुणि सम चारू फल सोभे ।
कनक गुलाब रंग गुल्फ जुग शंकर-मानस लोभे ॥
कामधेनु चिन्तामणि कल्पतरु पदमा सहित सुवासे ।
आदिक सुर असुर जगत भरि निज जन पुरित आसे ॥
अतुलित अन्त उपमति पद पंकज आदिनाथ धर ध्याने ।
सुत सम्पत्ति सुख धन मंगल दै सतत करिये कल्याने ॥
(तत्रैव)

(९९)

काली तारिणि त्रिपुरसुन्दरी भुवनेशी जगमाया ।
भैरवि देवि प्रचण्ड चण्डिका धूमावति करु दाया ॥
बगलामुखि मातङ्गिनि कमला निशदिन करु प्रतिपाले ।
भक्ति अचल जस सुत धन मंङ्गल दय अभिनव सुख जाले ॥
मुदित रहय नित बिसरि दोष सभ अनुछन पुरु अभिलाखे ।
जगत जननि जगबाहर हम नहि कि कहु हम दुख लाखे ॥
तुअ पद प्रवल सुमिरन कै नित रहलहुँ तोहरे भरोसे ।
आदिनाथ पर कृपा करिये दाहिन रहु तजि दोसे ॥
(तत्रैव)

(१००)

प्रकृति पुरुष शिव-शक्ति। निर्गुण सगुण सुभक्ति ।
मातृ पितृ जगजान । रात्रि दिवस अनुमान ।
योग भोग युत देह । भगवति पद युग नेह ।
आदिनाथ कवि भान । दुहु मिलि करु कल्यान ।
(देवीगीत शतक-प्रबन्धक बाबू श्री त्रिलोकनाथ मिश्र, सीताराम प्रेस, काशी)

(१०१)

श्रीत्रिपुसुन्दरी

अभिनव उदित दिवाकर तन रूचि बाल निशाकर भाले ।
अतिशय रक्त वसन पहिरन शुचि लोचन तीनि विशाले ॥

कल्पद्रुमजित बाहु चारि तुअ सभ जग पालन हारे ।
सर अरु पास धनुश्र इक्षुदण्डक अंकुस सहित अपारे ॥
श्रीयुत चक्रकमल पर पदयुग सुमिरत पुर अभिलाषे ।
विधि हरिहर तुअ पद युग सेवक आगम निगम सुभाषे ॥
त्रिभुवन अतुलित रूप तोहर थिक त्रिपुरसुन्दरी देवी ।
आदिनाथ के पुरिय मनोरथ नित प्रति तुअ पद सेवी ॥
(तदैव)

(१०२)

पहिरन वसन अरुण अति अभिनव बाल सुधाकर भाले ।
उदित दिवाकर तनु दुति सुषमा लोचन तीनि विशाले ॥
सुन्दर अक्षतमाल अभयवर शोभित भुज पुनि चारी ।
अरुण कमल ऊपर तुअ पदयुग सुमिरत लह फल चारी ॥
वेद पुरान भेद नहि पावत ब्रह्मादिक धर ध्याने ।
जपत नाम तुअ पुरत मनोरथ अनुछन बाढ़त ज्ञाने ॥
आदिनाथ के दहिनि भए रहु निशिदिन त्रिपुरा बाले ।
सुत यश सुख धन चारि पदारथ मंगल दय सभ काले ॥
(तत्रैव)

(१०३)

बगलामुखी

हे बगलामुखि शत्रु नाश करु निज जन पालिनि देवी ।
अमृतसिन्धु बिच मणिमण्डप पर रत्नसिंहसान सेवी ॥
ता पर तुअ पद अनउपमित छवि शोभित अति भयहारी ।
पीताम्बर भूषण अनुलेपन पीत कुसुममय हारी ॥
अतिशय असित चिकुरचय फूजल युगललोचन जनि कञ्जे ।
रिपुक वसन कर वाम सओ पीड़ित दहिन गदा भय भञ्जे ॥
युगल भुजा तन कनकवरन दुति कुण्डल ललित कपाले ।
आदिनाथ पर कृपायुक्त भय दिअ फल चारि अतूले ॥

(१०४)

भगवति हरि सतत दुखदारिद बगलामुखि तुअ नामे ।
कनक सिंहासन पर तुअ पद युग तीनि नयन पुरु कामे ॥
पीतवसन तन चामीकर सन मुकुट निशाकर राजे ।

चम्पक माल विराजित पहिरन चारि बाहु छवि छाजे ।।
मुद्गर पास वज्र रिपु रसना भूषण शोभित देहा ।
द्विष्र दामिनि तिनि लोकक चिन्तित निज जन पर अति नेहा ।।
तुअ पद पङ्कज सुरमुनि सेवत शत्रुक करत विनाशे ।
आदिनाथ पर कृपायुक्त भय सतत पुरिय सभ आसे ।।

(१०५)

सुधा सिन्धु बिच मणिमय मण्डप ता बिच मणिमय वेदी ।
ता बिच रत्नसिंहासन ऊपर गुगल चरण भय भेदी ।।
रिपुक मौलि पर रहत सिंहासन प्रेतासन अभिरामे ।
कनक रुचिर तन तेज प्रकाशित बगलामुखि तसु नामे ।।
पीत वसन अरु लेपन भूषण पीत विराजित हारे ।
अरि रसना कर सओ कर पीड़ित ता पर गदा प्रहारे ।।
जे जन सुमिरत तुअ पद पंकज तकर पुरत अभिलाषे ।
आदिनाथ के सतत करिअ शुभ अशुभ हरिअ नित लाषे ।।
(देवीगीत शतक)

(१०६)

अन्नपूर्णा

भगवति मम कल्याण करिय नित नमो भक्ति दिअ दाने ।
अन्नपुरनि मायामय जगगति शिवक घरनि श्रुति जाने ।।
उदित दिवाकर सहस्र देह दुति लोचन तीनि विशाले ।
वाञ्छादात्रि महेसि भाल ससि चित्रित वसन अमोले ।।
शिवक नृत्य देखि मुदित सुमानस अन्न दान रत दाया ।
साधक अभीष्ट सिद्धि निधि दायिनि दुखनाशिनि जगमाया ।।
त्रिकोण पद्म बिच षडङ्ग युवतिमय सुन्दर रूप विराजे ।
ब्राह्मी आदिक रूप तोहर थिक सर्वदायिनि जगदम्बे ।।
रूद्रादिक तन धारिणि पूजित सम्पति दायिनि नामे ।
आदिनाथ पर कृपायुक्त भय सतत पुरिय मनकामे ।।

(१०७)

कमला

भगवति जलधिसुते शुभकारिणि घनरुचि चिकुर विराजे ।
कनक रूचिर तन अथिक सुलक्षणि चारि भुजा छवि छाजे ।।
मणिमय खचित कीरिटि सुमस्तक पाटक शोभित चीरे ।

वर अरु अभय दुहू दिस दुहुकर युगकर कमल सुधीरे ।।
असित गजेन्द्र चारि कनकघट भरि भरि अमृत लावे ।
मुख अम्बुज पर सिञ्चित अनुछन वाम दहिन दिस भावे ।।
भूषण मणिगण खचित लसित तनु अनउपमित जगमाया।
विधि हरिहर इन्द्रादिक सुरमुनि सेवित नित करु दाया ।।
कमलसुमुख करकमल सुकुचपद कमलालय नित देवी ।
कमल सुआरान अधिक सुभग छवि जगतजननि जगसेवी ।।
स्तोत्रक लक्षण सुभाव कथन थिक तुअ गति श्रुति नहि जाने ।
आदिनाथ कर कृपायुक्त भय सतत करिय कल्याने ।।

(१०८)

तारिणी

द्वीपि अजिन कटिदेश भीमतनु लम्बोदरि अति खर्वे ।
अस्ति चारि बिच खप्पर राजित भाल भयानक गर्वे ।।
पङ्कज ऊपर एक चरण तुअ तापर दुतिय विराजे ।
नखरुचि शुचिसम अमृत हासयुत नवयौवन छवि छाजे ।।
खर्ग कर्तृयुग दक्षिण कर लस मुण्ड कमल दुइ बामे ।
शोभित भाल अक्षोभ महाऋषि तारिणि सतत सकामे ।।
दन्तरदन्त विकाश त्रिलोचनि लहलह रसन सहासे ।
उदित दिवाकर बिम्ब कान्ति तन ज्वलित चिता थिक वासे ।।
जटाजूट अतिपिङ्गल शोभित वेद भेद नहिँ जाने ।
कंजज श्रीपति सहित उमापति सतत धरत तुअ ध्याने ।।
आदिनाथके दहिनि भय रहु सतत करि कल्याने ।
कृपायुक्त भय दोष छमा कय चारू फल दय दाने ।।

(१०९)

धूमावती

भगवति विदित श्यामरुक्ष तनु धूमावति तुअ नामे ।
केसपास अति लम्बित फूजल गगन देह अभिरामे ।।
कलह प्रेममय मलिन वसन रुचि विकट दसन छवि छाजे ।
क्षुधित सतत मन दीन त्रिलोचनि तरल सुभावहिँ राजे ।।
मन उद्वेग दुसह अनुछन जन महिमा जगभरि जाने ।
आदिनाथ पर कृपायुक्त भय सतत करिय कल्याने ।।

(११०)

मातङ्गिनी

कीरक समरुचि ललित श्याम तनु मणिमय भूषण देहा ।
मणि मुक्तादिक हार सुलक्षणि भाल बाल शशि रेहा ।।
मधुरहास मुखमण्डल मण्डित लोचन तीनि सुभासे ।
विधि आदिक सुर चरण सुसेवित पहिरन शुचि पटवासे ।।
रत्नसिंहासन पर तुअ पदयुग षोडस वयस विराजे ।
असि अङ्कुस लस दहिन हाथ युग पाश खेट दुइ वामे ।।
अष्ट सिद्धिमय हरिहर सेवत मातङ्गिनि तुअ नामे ।।
सुरनर मुनि जग ध्यान धरत नित आगम निगम बखाने ।
भुक्ति मुक्ति सुख आदिक पावत सतत लहत कल्याने ।।
आदिनाथ पर कृपायुक्त भय दाहिनि रहु जगमाया ।
चारि पदारथ सुत धन मंगल दय करि करु नित दाया ।।

(१११)

छिन्नमस्ता

नाभिकमल बिच बीच अरुणरुचि राजित दिनमणि बिम्बे ।
ता पर योनि चक्र पर रतियुत मन्मथ कर अवलम्बे ।।
रति विपरीत ऊपर तुअ पदयुग कोटि तरुण रवि भासे ।
कापल सिर कर वाम प्रकाशित दक्षिण काति प्रकाशे ।।
दिग अम्बर कच फूजल निज शिर कापले शोणित पीबे ।
बाल दिवाकर रुचिर कान्ति लस लोचन तीनि सुभावे ।।
तीनिधार वह रक्त उरध भय मध्यधार निज मूखे ।
दुइ दिस योगिनि पिबत धार दुइ अति आनन्दित भूखे ।।
तडितलोल युगलोचन रसना कटकट दसन सहासे ।
बिषधर माल शत्रु शिर मालिनि सुरपालिनि द्विष नासे ।।
निधि आदिक सुर तुअ पद सेवक प्रचण्ड चण्डिका देवी ।
अचिन्त्यरूप तुअ जगत जोतिमय योगीन्द्रादिक सेवी ।।
उत्पत्ति स्थिति सहति कारिणि तीनि रूप गुण माया ।
तीनिलोक मह सभ घट वासिनि करिय अहोनिसि दाया ।।
जगतजननि तोहे जगत वेआपित नारि पुरुषमय आनी ।
आदिनाथ पर कृपायुक्त भय दाहिनि रहिय भवानी ।।

(११२)

भगवति रुचि तुअ कामचार नित जगतजोति जगमाया ।
सकल असंभव तुअ बस संभव करिय अहोनिसि दाया ।।
रविमण्डल बिच कमलकोश पर त्रिकोण रेख अति राजे ।
ता बिच रति मनसिज रतिविपरित करत सुख साजे ।।
ता ऊपर पद्युगल कमल लस उदित भानु दुति शोभे ।
उरज विशाल माल रिपु शिर युत फणि उपवीत सुशोभे ।।
खड्ग दहिनकर वाम अपन सिर अति विकराल विराजे ।
फूजल चिकुर दशन कटकट कर लहलह रसन सुधाजे।।
निजगण रूधिर धार बह ऊपर तीनि बलित अति धीरे ।
दुइ दिश योगिनि दुइ दुइ पीवति एक बपन मुख गीरे ।।
आदिनाथ पर कृपायुक्त भय सतत करिय कल्याने ।
सुत सम्पति सुख मङ्गल मुद नित चारू फल कय दाने ।।

(११३)

भुवनेश्वरि

भगवति जय भुवनेशि ललित छवि वसन भूषण युत देहा ।
अतिशय असित चिकुर अतिचिक्कन ता बिच सिन्दुर रेहा ।।
बाल दिवाकर बिम्ब अरूणद्युति लोचन तीनि विशाले ।।
त्रिभुवन सुषमा उपमालज्जित मधुर हास अति शोभे ।
मणिमय खचित कीरीट बलित शिर उपमा त्रिभुवन लोभे ।।
वाम उभयकर शुभग अभयवर दक्षिण अङ्कुस पाशे ।
भूपुर बीच भुवन दल षोडस नसु दल कमल सुभासे ।।
ता बिच अङ्कोण मधि पदयुग सुखद ध्यान भय नासे ।
के बरनत तुअ चरण के महिमा आगम निगम सत्रासे ।।
विधि आदिक सुरमुनि तुअ सेवक वरदायिनि जगदम्बे ।
आदिनाथ पर कृपायुक्त भय निज पद दय अवलम्बे ।।

(११४)

भैरवी

अयुत दिवाकर उदित देहद्युति रक्त पटम्बर शोभे ।
रुधिर लेपितमय पीन उरजमुख लोहित कमल समाने ।।
रत्नमुकुट शशधर सिर शोभित हास ललित मृदुमाने ।
पुस्तक अभय वाम दुअओ कर अक्षमाल वरदाने ।।

दक्षिण युगल चारि कर राजित निज जन पालित माने ।
शत्रु संहारिणि भैरवि भगवति विधि हरिहर धर ध्याने ॥
आदिनाथ पर कृपायुक्त भय सतत करिय कल्याणे ॥

(११५)

दक्षिण काली

भगवति जगभरि जोति प्रकाशित दक्षिणकाली नामे ।
नवयौवन तन सजल जलद रुचि कुच उन्नत अभिरामे ॥
शिशु शशिभालहिँ बदन भयानक विकट दसन फुज केशा।
लहलह रसन सोनितसँ भीजल असित श्रवित सृक्कदेशा ॥
शव दुइ कुण्डल कान नयन त्रय भीम भयानक रावे ।
सघन पाँति कय शवकर गाँथल कटि पहिरन रुचि पावे ॥
खर्ग मुण्ड दुई वाम भुजामह दहिन अभय वर दाने ।
चारि भुजा उर मुण्डमाल लस तस नख निसि वसु जाने ॥
शिव शव ऊपर तुअ पदयुग लस वास रुचय समसाने ।
सिबा चतुर्दिश योगिनिगण युत आनन्दित करु गाने ॥
आदिनाथ पर कृपायुक्त भय सतत करिय कल्याणे ।
सुत सम्पति सुख मंगल मुद नित दाहिनि रहु दय दाने ॥

(११६)

शीतला

रासभवाहिनि शीतल देवि । थिकिह दिगम्बरि सभ जग सेवि ॥
मार्जनि कलस दुअओ करलाय । मस्तक ऊपर सूप देखाय ॥
पापरोगनाशिनि जग माय । सुमिरत भगत सकल सुख पाय ॥
दाह पीड़ित कय शीतल भाष । छूटत रोग पुरत अभिलाष ॥
पाप रोगक नहि आन उपाय । एक तुअ पदयुग विपति न खय ॥
उदक मध्य पूजत धरि ध्यान। तेकरा घर नहि रोग पयान ॥
आधि व्याधि ग्रह दोष नसाय । निज सेवक पर सतत सहाय ॥
आदिनाथ के दिअ वरदान । पुरु अभिलाष करिअ कल्याण ॥

(११७)

भगवती

आदि सनातनि नित्य जगतमय निर्गुण सगुण सनेहे ।
तीनि शक्ति त्रिगुणा तन भगवति नारि पुरुषमय देहे ॥
विधि हरिहर अरु शेष ने जानत ततमत कय रहु वेदे ।

एहि सँ आन जानत के महिमा जे नहिँ जानत भेदे ॥
तोहरहि सओ सभ जग थिक रचना तन्त्र मन्त्र श्रुति सारे ।
चारू आश्रम कर्म चारि पुनि इत्यादिक संसारे ॥
कर्म क्रिया कर्त्ता तोहे ईश्वरि मायामय अनुमाने ।
आदिनाथ पर कृपायुक्त भय सतत करिय कल्याने ॥

(११८)

भगवति तुअ पद युगल सरोरुह अमल सुधारस जानी ।
भ्रमर हमर मन वसत निरन्तर जरा मृत्यु भय मानी ॥
तुअ शरणागत बचत काल सँ रोग शोक नहि व्यापे ।
माया मोह जल सभ काटत यम पुनि थर थर कापे ॥
जे जन सुमिरत जपत नाम तुअ से जन शिव समतूले ।
मन अभिलाष पुरत तसु अनुछन विधि लिपि मेटत मूले ॥
ऋण के नाशिनि नाशि शत्रुकँ छमिय हमर अपराधे ।
आदिनाथ के पुरित करिय नित सकल मनोरथ साधे ॥

(११९)

भगवति भवभय हारिणि तारिणि कारिणि सकल जहाने।
विधि हरि हर तुअ पदयुग सेवक वेद भेद नहि जाने ॥
नाना तन धय जगत लेआपित निज इच्छा थिक रूपे ।
मायामय सभ घट घट वासिनि नित्य अनित्य सरूपे ॥
जगजजननि जगबाहरि हम नहि करिय सतत प्रतिपाले ।
मन अभिलषित पुरित करू निशिदिन हरिय विपति सभकाले ।
आदिनाथ के पुरिय मनोरथ दिअ निज भक्ति सुदाने ॥

(१२०)

भगवति भवभय दुःख निकन्दिनि अपरूप थिक तोर माया।
सभ जग मय तन नित्य सनातनि करिय अहोनिशि दाया ॥
अनुछन निजपद भक्ति अचल दय दाहिनि रहु जगदम्बे ।
हरिय दुसह दुख रोग शोक जत शत्रु संहारिय अम्बे ॥
विधि हरिहर सहसानन आदिक वेद भेद नहि जाने ।
एको नखक अग्रभरि महिमा के करि सकत बखाने ॥
जगतजननि तोहे कृपायुक्त भय नित्य करिअ कल्याने ।
आदिनाथ के सतत दोष छमि दय फल चारि सुदाने ॥

(१२१)
गंगा

पाप विनाशिनि पावनि भगवति गंगा विष्णु स्वरूपे ।
धर्ममयी द्रवरूप सनातनि पापदहन अनुरूपे ।।
स्नान पान निर्वाण सुदायिनि दिव्यलोक सोपाने ।
तीर्थपवित्र सरित अति निर्मल नाम जपत कल्याने ।।
विष्णुपाद सँ जनन शम्भु सिर जटाजूट थिक वासे ।
सिन्धुक कामिनि मन्दाकिनि पुनि भागिरथी पुरु आसे ।।
जह्नुसुता हरिनारि भोगवति सतत धरिय तुअ ध्याने ।
आदिनाथ पर कृपायुक्त भय निसदिन करू कल्याने ।।

दुर्गादत्त सिंह

(१२२)

तुअ पद कमल सतत हम पूजब कयल अछि मन अभिलाषे।
करहु कृपा दाया करु जननी मम गृह करहु निवासे ।।
हम अति विकल विषय मे पड़लहुँ तारिणि अहिँक भरोसे ।
परम मगन भै पुरहु मनोरथ शिव संग करिय निवासे ।।
दुर्गादत्त पुत्र अहिँक प्रिय जननी तारिणि अहिँक अछि आसे ।।
(मैथिल भक्त प्रकाश)

(१२३)

जय जय जय वर दिअ हे गोसाउनि तारिणि त्रिभुवन देवी ।
सिंह चढ़ल मैया फिरथि गोसाउनि अतिबल भगवति चडी ।।
कट कट कंट मैया दन्त सबद कएल गट गट गिड़लनि काँचे ।
घट घट कय मैया शोणित पीलनि मातल योगिनि साथे ।।
दुर्गादत्त पुत्र अहिँक थिक जननी एकहु असुर नहि बाँचे ।।
(मिथिला संस्कार गीत)

(१२४)
जगद्धात्री

सिंह पर एक कमल राजत ताहि उपर भगवती ।
उदित दिनकर लाल छवि निज रूप सुन्दर धारती ।
पद सरोरुह जगत सेवित चारि भुज लसि राजती ।
कर धनुष गहि शंख गहि अरु चक्र गहि जगपालती ।।
सरद पूरन चन्द्र वदनी नयन तीनि भदावनी ।
मणि मुकुट भूषण सहित पट झलक लाल सोहावनी ।।

नाभि कुवलय नाभि तिरबलि बनै लसि अति शोभती ।
शुभ नाग के उपवीत कान्धे हार मुक्तामणि लती ।।
रत्न दीप विशाल वासिनि शम्भु संग विराजती ।
ब्रह्मरूपा जगत व्यापित सकल तेज सोहावती ।।
सकल मुनि गण नाग आदिक करत ध्यान महामती ।
सुर विरंचि आदि सेबित वन्दिता-सुर भारती ।।
परम पावन नाम जाके पाप सभ को टालती ।
सदय रूपा सतत धन दय कृपा को अनुसारती ।।
यश बखनत वेद आदिक जगत धात्री सुखवती ।
शरण गहि नित ध्यान करु मन सतत छन प्रतिपालती ।।

दीनबन्धु झा

(१२५)
भगवती

जयसि भगवती भक्त-तारिणि वैरि वारिणि हे ।
पाद लम्बित चिकुर धारिणि कोटि दिनकर-भारिनि ।।
अभयवर करवाल मानुष-मुण्ड धारिणि हे ।
कर मयाद्भुत काञ्जि शालिनि वेद बाहु विराजिनि ।।
भीषण ललदुग्र रसना घोर हासिनि हे ।
शयित शवगत पद सरोजिनि घनघनाघन रोचिनि ।।
योगिनी गण संग रुचिर स्वैरचारिणि हे ।
कालिके ललितेश पालिनि देवि किल्विष नाशिनि ।।
दीनबन्धु जनानुकम्पिति भव सुधारिणि हे ।।
(मैथिल भक्त प्रकाश)

(१२६)
चामुण्डा

जयसि दारुण वेष धारिणि खड्गपाशिनि हे ।।
भुवन भीषण सिंहनादा दनुज धैर्य विलोपिनी ।
त्वमसि रक्त निमग्न नयना दैत्य गंजिनि हे ।।
शुष्क मांस भयानका कृतिरसुर समुदय पोषिणी ।
द्वीपि चर्म पर वसाना चण्ड धाविनि हे ।।
मनुजमाला कलित देहा त्वमसि दानव राबिणी ।

असि कराल सुरारि भीकर घोर वक्त्रिणि हे ।।
नाद पूरित शकल दिग्मुख मन्दहास विधायिनी ।
सिद्धमुनि बहु विस्मयप्रद कर्मकारिणि हे ।।
अतुल खट्वावयवहस्ता लोलरसना शलिनी ।
हस्तिनी मुरारि रथगज बाजि वर्विणि है ।।
भक्त ललितेशानुमोदिनि चण्ड मुण्ड विनाशिनी ।
दीनबन्धुजनैक वालिनि चित्र रूपिणि हे ।।
(तत्रैव)

जीवन झा (१२७)

दिन पुन फेरह भुवनेशी, तोहरे वश सभ देशी ।
तनु सुषमा अनुहरय देवि तुअ, प्रात भानु परिवेशी ।
व्यापल रूप सकल महिमण्डल, सौम्य मनुज उपदेशी ।।
तारा निकर चारु चूड़ामणि, लसित गगनमय केशी ।
शारद शुचि अष्टमी कलानिधि, रुचि शिर मुकुट निवेशी ।।
मिथिला देश वसय भुवनहि बिच, तोँह थिकह भुबनेशी ।
तौँ कत मिथिला देश निवासी, मानव एहन कलेशी ।।
वर मुद्रा कहिया धरि उगहब, कोमल हाथ-निवेशी ।
बेरहु पर तौँ अपन भक्त कँ, अभिलाषा अनुदेशी ।।
तेना हाथ निज धरिय माथ पर, मम अमियाभिनिवेशी ।
यहि कराल कलि अन्धकारि पथ, हम ने यथा अब ठेशी ।।
शुम्भ निशुम्भ सदृश दुर्जन कँ, छाड़िअ जनि लव केशी ।
मारिय अदय अवश्य चण्डिके ! पाश कण्ठ बिच पेशी ।।
(कविवर जीवन झा रचनावली)

तेजनाथ (१२८)

जगत जननि पद पंकज सजनी मन मधुकर धरु आस ।
जेहि पद रज यश तिहुपुर सजनी रहत सदा परकास ।।
कुमतिहरन मंगलगृह सजनी भंजन यम कृत त्रास ।
जेहि पगु सुभरि सुमरि नित सजनी विद्या हृदय निवास ।।
अभिनय विघ्न निवारण सजनी पूरण मन अभिलाष ।
तेजनाथ कवि चाहत सजनी चरण कमल हिय वास ।।
(भक्ति प्रकाश-भक्ति रत्नावली, कन्हैयालाल कृष्णदास, १९१०)

(१२९)

जय जय काली अरि उर साली सकल भुवन अवलम्बे ।
सुरपति अनुचर नूतन तन रुचि मुक्त चिकुर जगदम्बे ।।
श्रुति शव कुण्डल तीन विलोचन रसना दसनत्रिकासे ।
मुण्डमाल उर पीन पयोधर खड्ग खपर सिर पासे ।।
कटि कर किंकिणि नूपुर पद रव शव शिव हृदय विलासे ।
भूत पिशाच कुतूहल कर बहु योगिनिगण सहवासे ।।
सुरमुनि ध्यान करत तव निशिदिन तदपि न पावत ओरे ।
तेजनाथ मतिमन्द शरण तुअ क्षमहु दोष सब मोरे ।।
(तत्रैव)

(१३०)

श्रीतारा

जय जय तारे हरु दुख भारे सहस्र सूर तुअ काँती ।
एक जटा तिनि नयन विराजित कुण्डल युगल सुहाती ।।
रसना ललित दरान अति शोभित भूषण पन्नग जाती ।
श्याम सरोज कपाल खड्ग अहि कटि किंकिणि रहु पाती ।।
पीन पयोधर युगल लसित उर बाघछाला छवि भ्राजें ।
पद युग कमल सदा सुरसेवित नूपुर अनहद बाजे ।।
कत कत दीन दुखो तुअ तारल तेजनाथ धरु आसे ।
भूप रमेश्वर सिंह भक्त तुअ पुरिय तुरित अभिलाशे ।।
(भक्ति प्रकाश भजनावली)

(१३१)

जय जय भगवति भवभय हारिणि नाम उदित जगतारे ।
खन निर्गुण खन सगुण विहारिणि असुर संहारिणि तारे ।।
फूजल चिकुर वदन अति शोभित निज जन तारिणि माता ।
हेम कुण्डल श्रुति युगल विराजित कर्तृकमिल अहि काता ।।
मुण्डमाल उर लसित बघम्बर भुजंग अङ्ग लपटाइ ।
युगल चरण तुअ पंकज राजित सुर नर ध्यान लगाइ ।।
एक अभिलाष होत नित अन्तर हरहु हमर दुख भारे ।
तेजनाथ के सकल मनोरथ पुरत शरण गहि तारे ।।
(तत्रैव)

(१३२)
श्रीगंगा

गंगे विनति सुनिय दय कान ।
हमसन पतित जतेक जगत मे ताहि शरण नहि आन ।
तोर सुयश के कति वरनन कर, महिमा अपरम्पार ।।
पतित उधार करए वसुधा मे अमित वारि बहि धार ।।
जे जन तन त्यागथि तुअ तट मे ताहि विमान चढ़ाए ।
त्वरित जाथि लय सुरपुर सब सुर सुमन माल पहिराए ।।
आढ़ति कर सुरतिअ प्रमुदित भए निजकर चओर डोलाब ।
अमरराजमे सुखहिँ वास कए दिन दिन मोद बढ़ाव ।।
'तेजनाथ' मतिमन्द कहाँ धरि तोहर सुयश करु गान ।
अन्तकाल मे हमरो जननी करब एहि विधि त्राण ।।
(मैथिली गीत रत्नावली)

सूरदास (१३३)
जगदम्बा

जगदम्बा भवानी हे हमरा पर दया किए करती ।
नाग उपर संसार बिराजै सिंह उपर देवी काली ।।
कतेक दल सौ दलमल औती असुर मारि संहारती ।
ब्रह्मा घर ब्रह्माणी कहौती शिवजी के घर गौरी ।।
विष्णु घरें मे लक्ष्मी कहौती तीनू लोक के ताड़ती ।
सूरदास प्रभु तुमरे दरस को नित उठि माला जपती ।।
(मिथिला संस्कार गीत)

दामोदर (१३४)
जगजननी

जगत जननी हे सुनु दुःख मोर। भेलहु अनाथ शरण धैल तोर ।।
सम्पतिहीन छीन भेल ज्ञान। तेँ बिसरल मा तुअ पद ध्यान ।।
जत-जत मन मे छल अभिमान। धर खन धैरज रहल न ज्ञान ।
दामोदर कवि गोचर भान । तुअ छाड़ि आहे मा दोसर नहि आन।।
(तत्रैव)

लक्ष्मीपति (१३५)
जननी

क्षमा समुद्र क्षमिय अब जननी कयलहुँ चूक हजारा हे।

जननी उदर जखन हम अयलहुँ-कयलहुँ धर्म विचारा हे ।।
अबितहिँ एतय सकल हम बिसरल राखल किछु ने विचारा हे ।
धर्म सनातन मर्म न जानल नव-नव सिखल अचारा हे ।।
ज्ञान बिना हम ज्ञानी बनलहुँ धर्म-कर्म सौँ न्यारा हे ।
परमारथ परलोक बिसरलहुँ डूबय चाहिय मझधारा हे ।।
आर उपाय किच्छु नहि सुझय तुअ पद एक अधारा हे ।
सत्य वचन जय जय करुणामयि दीनक सुनिय पुकारा हे ।।
अहिँक सकल माया थिक जननी लक्ष्मीपतिक अधारा हे ।
(तत्रैव)

यदुनाथ मिश्र (१३७)
सरस्वती

दैतय दमनि हंसगमनि काम पालिते ।।१।।
मन्द हसनि श्वेत वसनि शुक्ल मालिके ।
रूचिर चिकुर चमक चटुल, मधुकरालिके ।।
कुरव हरणि कुमति तरणि, देवि पालिके ।
इन्द्र शरणि भक्त भरणि, वीण त्रादिके ।।
दिअओ दरश परश पदक, विघ्नहारिके ।
सकल भूप रूप मनक, मोहकारिके ।।
(मैथिली नाटकक उद्भव आ विकास)

ललितेश्वरी देवी (१३८)
कालिके

जयति जगदम्बिके काली, चरण उर धारि बैसल छी।
जगत के झूठ ममता मोह, मन सौं टारि बैसल छी।।
न जप-तप-ध्यान हम जानी न पूजा पाठ गुरू सेवा।
जगज्जननीक पूजा-दीप टा हम बारि बैसल छी।।
बिताओल तीन पन जगमे बन्हैतहि पाप के मोटा।
अपन उद्धार आशा लय विनत हम हारि बैसल छी।।
दुखी पद-किंकरी 'ललितेश्वरी' दिशि हेरू मा काली ।
विकल शरणागता बनि अम्बिके चौपाड़ि बैसल छी।।

नन्दिनी देवी (१३९)
काली

जय काली कलि कलुष-विनाशिनि जगत जननि जगदम्बे ।
भीत भक्त पर सदय रहब मा दीन हीन अबलम्बे ।।

सुरहुक ऊपर कष्ट पड़ल लखि हरल दुख अविलम्बे ।
शुम्भ निशुम्भ महिष संहारल मारल असुरक दम्भे ॥
मानस-निविड़-तिमिर कुल-नाशन, तुअ पद नख शशि बिम्बे ।
'नान्दनी'क दिशि ध्यान रहए नित, मिनति एक अछि अम्बे ॥

जीवानन्द (१४०)

भगवती

जय भय भञ्जनि, सुर-मुनि रञ्जनि, जय इन्द्रादिक शरणे ।
के नहि पूजि पाओल, वाञ्छित फल, श्रुति-वन्दित तुअ चरणे ॥
जय जय मधुकैटभ-बधकारिणी महिषासुर कए नाशे ।
सुरगणकेँ स्वर्गहि पलटाओल, कएल दूर सभ त्रासे ॥
धूम्रनयन सन विकट दैत्य कें डाहि मिलाओल माटी ।
चण्ड मारि मुंडक दाढ़ी धए, झटित लेल शिर काटी ॥
रक्त बीज सन अतुल पराक्रम जकर न बधक उपाय ।
तकरा दाबि दाँततर लगले काँचे लेलहुँ चिबाए ॥
जकरा भय-कातर इन्द्रादिक, स्वर्गहु सँ रहु काते ।
तेहेन निशुम्भ-शुम्भकेँ मारल, शमन कएल उतपाते ॥
निशिवासर भगवति-पद-सेवक कवि जीवानन्द भाने ।
श्रीकामेश नृपति काँ हेरिअ सुरथ नृपाल समाने ॥

सुरेन्द्रझा 'सुमन' (१४१)

धूमावती

धयल षोडसो श्यामा सुषमा धामा अपन नयान ।
कयल त्रिपुर-सुन्दरी नयन-अभिरामा अनुखन ध्यान ॥
कर-कमला कोमल कमला कय हृदय-कमल सन्धान ।
तारिणि तारा तरल द्वितीया दिस टकटकी निदान ॥
छली शारदा हमर उपास्या वीणा पुस्त संग ।
स्मितमुखी गीत कवित संगीत ललित लय भरथि उमंग ।
अथवा मदिरारुण-नयन मधु-वयना छवि छविवंति ।
घर-आङन चानन छिटकाबथि भरथि सुरभि रसवंति ॥
किन्तु निगत छल, उवरल मंत्र अदृष्ट, दृष्ट परिणाम ।
इष्ट बनलि अयली घर हमर अदृष्ट देवता वाम ॥
धूमावती सती, वयसा वरिष्ठ, वचसा कटु क्लिष्ट ।
रूप बिरुपा, प्रकृति अनूपा, कृतिहु विकृत, नहि शिष्ट ॥

मलिनवसन घर-द्वारि बहारथि बाढ़नि हाथहि नित्य ।
जेना कोनो आयलि छथि वेतन-भोगिनि कोनहु भृत्य ॥
सूप हाथ किछु किछु सदिखन फटकैत अन्न भरिपूर ।
बिच-बिच गुन-गुन सोहर लगनी गबइत बिनु धुनि सूर ॥
शय्यागृह सँ भनसा-घर जनिका रूचि बढ़ल विसेष ।
जे पड़ोसिनिक बात पुछै छथि, खबरि न देश-विदेश ॥
ज्ञान जनिक बच्चा-जच्चा धरि ध्यानो धरे कुटुम्ब ।
अक्षर जनिक गोसाञि नाओ धरि पोथी पतरा लम्ब ॥
मन छल विमन, कोना खन काटब विरुचि, न रुचि विज्ञान ।
दृगक प्यास मेटैत कोना ? ताकल भगवति भगवान ॥
देखल अहा ! भगवती ! धूमावती निरूपित रूप ।
स्वयं महाविद्या परतच्छे तन-मन सबहु अनूप ।
स्वर्ण अन्न सँ भरल सूप, बाढ़नि स्वच्छता प्रतीक ।
श्रमक स्वास्थ्य-सौन्दर्य दिव्य आन्तरिक रूप रुचि लीक ॥
पुनि छलि लगहि छिन्नमस्ता करइत जे नव संकेत ।
छिन्न अपन मस्तक कय उर रुधिरहु दय भरी निकेत ॥
विदित महाविद्या धूमावति हमर देवता इष्ट ।
धन्य जीवनक क्षण, क्षणभरि यदि दर्शन पुरल अभीष्ट ॥
श्यामा उमा अन्नपूर्णा सभ एतय समन्वित रूप ।
धन्य कयल अनुरक्त भक्तकेँ, जयतु देवि अनुरूप ॥

ईशनाथ झा (१४२)

दुर्गासप्तसती

जय जय दुर्ग-दलनि माँ दुर्गे, दुरित निवारिणि माये ।
महिष निशुम्भ शुम्भ संहारिणि, भव तारिणि भव जाये ॥ माहे०
अरि सँ मिलि अनुचर नृप सुरथक, जखन हरल धन-धामे ।
एकसर भागि गहन बन अएला जत मुनि मेधस नामे ॥ माहे०
सतत विकल मन घुमइत अनुखन नहि छल किछु विसरामे ।
दुष्टो प्रजाजनक कल्याणक चिन्ता आठो यामे ॥ माहे०
भेटल वैश्य समाधि ततहि जे, छल आकुलित उदासे ।
पुत्र कपुत्र छीनि धन तकरा, देने छल वनवासे ॥ माहे०
परिचय बुझि नृप सुरथ पुछल कहु किए अँह एहन हताशे ।
कहि सभ कथा समाधि, कहल नृप! सुनिअ हमर अभिलाषे ॥ माहे०
यदपि कुपुत्र भेल, पुनि तकरे, अछि कुशलक जिज्ञासे ।
जानि पड़य नहि हमर किएक मन लपेटल ममता पाशे ॥ माहे०

सुनि नृप कहल सुनिअ हमरो मन, अछि एहने अज्ञाने ।
लूटल राज सबहि जन मिलि पुनि तकरे कुशलक ध्याने ।। माहे०
बुझितहु मन नहि बुझए एकर अछि, कारण कओन विशेषे ।
चलु दुहुजन मिलि मेघस ऋषि सँ लेब एकर उपदेश ।। माहे०
मेधस ऋषिक समीप पहुँचि दुहु नत शिर कएल प्रणामे ।
अति विनीत भए बितल कथा कहि, कहल अपन मनकामे ।। माहे०
मेधस कहल सुनिअ दुहु जन अहँ हमर वचन दए काने ।
थिक मायाक खेल सभटा ई, सुविदित शास्त्र प्रमाने ।। माहे०
थिकथि योगमाया ई विष्णुक हिनकर चरित अपारे ।
करथि सृष्टि, पालथि, ओ नाशथि, अपरुप अछि बेबहारे ।। माहे०
जकर दहिन, ई से नहि धन-सुख पबइत अछि निर्वाने ।
जकर वाम, तकरहि दुख-जीवन, घोर नरक अबसाने ।। माहे०
मधुकैटभ हनि विधिक कएल जे त्राण प्राण भगवाने ।
से हिनकहि अतुलित बल-महिमेँ, कहइछ सकल पुराने ।। माहे०
जखन महिष सन प्रबल असुर सँ हारल देव-समाजे ।
तखन शक्ति ई तकरहु मारल राखल इन्द्रक लाजे ।। माहे०
दुष्ट निशुम्भ-शुम्भ पुनि देवक, छिनल जखन अधिकारे ।
नाना रूप धएल देवी ई, कएल असुर संहारे ।। माहे०
धूम्रनयन ओ चंड-मुंड हनि, रक्तक लेलनि पराने ।
भेल अकंटक राज सुरेशक, कएल देव यश गाने ।। माहे०
एहि विधि जखन दनुज-बाधा सँ हो पीड़ित संसारे ।
तखन-तखन दुष्टक दलनक हित, लेथि देवि अवतारे ।। माहे०
तेँ अम्बाक ध्यान कए दुहुजन, करू पूजन सविधाने ।
भेटत राज अतल धन पाएब, पाएब सुविमल ज्ञाने ।। माहे०
सुनि दुहुजन देवीक चरणमे, कएल अपन मन लीने ।
कए संयम पूजल निशिवासर, निद्राहार विहीने ।। माहे०
तीन वर्ष पर देवि प्रकट भए पुरल दुहुक मन-कामे ।
पलटल सुरथक राज, समाधिक, भेल ज्ञान अभिरामे ।। माहे०
सएह अहाँ दुर्गे मिथिलेशक, संकट करिअ विनाशे ।
ईशनाथ सुतकेँ नहि बिसरब, अछि मनमे विश्वासे ।। माहे०

मधुप

(१४३)
त्रिपुरभैरवी

समुदित सहस-सूर्य-किरणाबलि कान्ति-कलित-अभिरामा ।
अरूण-क्षौम-परिधान-धारिणी पुर प्रलयङ्कर वामा ।।
वारिजात-वन्दित-वदनश्री स्मित-विजितामृत धामा ।
रक्ते रञ्जित पीनपयोधरवती सर्वदा श्यामा ।।
त्रिविध-ताप-तम तरणि तारिणी रुनझुन रसना-धामा ।
तानुक-तनुक त्रिनयनि त्रिदेव-तोषित पूरित जनकामा ।।
पुस्तक-जपमालाऽभय वर विलसितकर निकर ललामा ।
शिशु-शशि-रत्न-सुशोभि-मकुट-मंडित, खंडित भव-भामा ।।
मञ्जु मुंडमाला नगबाला पद-निपतित-सुररामा ।
देथु भैरवी-कामगवी 'मधुप'हुँ पदपङ्कज धामा ।।

(१४३)
मातङ्गी

राजय जगमग माँ शिवरनिया ।
रतन सिंहासन बैसि वीण ल' कर बजबैत मधुर लय ध्वनिआँ ।।
चकमक चान चमकि लस भालहिँ मधु-मद-मूनल नैन ।
वल्लकि-निक्वण-मोदित कण-कण कलकल कीरमुखक श्रुत बैन ।।
विपुल नितम्ब अरुण-पट-मण्डित उरसिज-निहित-निचोल ।
मुसुकि-मुसुकि मधु मतङनन्दिनि शंखपत्र चुम जनिक कपोल ।।
कदम-कुसुम-कृत-माल-कलित-धृत कवरि भार, चित्राङ्कित भल ।
न्यस्त एक पद-पद्महिँ से रहि दाहिनि 'मधुप'हुँ करथु नेहाल ।।

श्रीकृष्ण

(१४४)
दक्षिणकालिका

जय जय जननि जोति तुअ जगभारि, दक्षिण पद युत नामे ।
शिशु शशि भाल, पयोधर उन्नत, सजल जलद अभिरामे ।।
विकट रदन, अतिवदन भयानक, फूजल मञ्जुल केशा ।
शोणितमय रसना अति लहलह, असृकमय सृक देशा ।।
तीन नयन अति भीम राव तुअ, शवकुण्डल दुहु काने ।
शव-कर-कांटि सघन पाँती कय, चहुदिशि कटि परिधाने ।।
शिव शवरूप उरसि तुअ पद-युग, सदा वास समसाने ।
फेरव कर रब चहुदिशि शोभित, योगिनिधन परधाने ।।
श्रीकृष्ण कवि भन, तुअ अपरुब गति, के लखि सक जगमाता ।
मिथिला-पतिक मनोरथदायिनि, सचकित हरिहर धाता ।।

विश्वनाथ

(१४५)

भगवती

जय जय सकल असुर कुल नाशिनि, आदि सनातनि माया ।
गिरिवर वासिनि, शंकरवासिनि निज जन पर करु दाया ।।
श्यामल रुचिर वदन तुअ राजित, तड़ित विनिन्दिक नयने ।
बघछाल पहिरन कटि अति शोभित, फणि कुण्डल युग काने ।।
रुचिर मुण्ड-हार उर राजित, खड्ग कर्तृवर हाथे ।
मोह कपाल लिधुर परिपूरित, अरु महिषासुर माथे ।।
फुजल चिकुर छवि के कवि कहि सक कोउ, लोहित बिन्दु पुराजे ।।
पद्मासिनि दाहिन रहु अनुखन, निज सेवक मन जानी ।
मिथिला महिपति शुभमति पूरिअ, विश्वनाथ कवि वानी ।।

म० रामेश्वर सिंह

(१४६)

कमला

जय जय जगजननि भवानी त्रिभुवन जीवन-रूप ।
हिमगिरिनन्दिनि थिकहुँ दयामय कमला कालि स्वरूप ।।
विधि हरि हर महिमा नहि जानथि वेद न पाबथि पार ।
आनक कोन कथा जगदीश्वरि विनमौ बारंबार ।।
पूर्वज हमर जतय जे बसला आश्रित केवल तोर ।
श्रीमहेश नृप तखन शुभंकर किंकर भए तुअ कोर ।।
विद्या धन निधि विधिवश पाबिअ माधवसिंह नरेश ।
वाग्मती तट भवन बनाओल दरभंगा मिथिलेश ।।
हमरहु जखन राज सँ भेटल अंश अपन तुअ पास ।
पूर्ण आश धए तृणहिक घरमे कएलहुँ जननि निवास ।।
क्रमिक समुन्नति शिखर चढ़ाओल करुणामयि जगदम्ब ।
राज-दार तनया देल सुत-युग राजभवन अविलम्ब ।।
वागमतीक त्याग तुअ देखिअ राजनगर तुअ वास ।
राजक केन्द्र प्रधान बनाओल तुअ पद धरि विश्वास ।।
सम्प्रति जलमय जगत बनाओल लीला अपरम्पार ।
राजनगर निज रक्षित राखल ई थिक करुण अपार ।।
करब प्रसन्न सेवन सँ अँहकेँ ई नहि अछि अब होश ।
वसहज प्रमोद जननि करु सुत पर एकरे एक भरोस ।।

जखन शरीर सबल छल तखनहु सेवल नहि हम तोहि ।
अब अनुताप-कुसुम अंजलि तजि किछु नहि फुरइछ मोहि ।
कर युग जोड़ि विनत अवनत भए करथि रमेश्वर अम्ब ।
सत चित आनन्द-रूप-दान मे करब न देवि विलम्ब ।।

(१४७)

समदाउनि

कि कहब जननि कहए नहि आवए छमिअ सकल अपराध ।।
नबओ रतन नव मास वितित भेल तुअ पद लगि परमान ।
चललहुँ आज तेजि सेवकगण आकुल सभक पराण ।।
सून भवन देखि थिर न रहत हिअ नयन झहरि रह नोर ।
गदगद बोल अम्ब तन थर-थर हेरिअ लोचन कोर ।।
चारि मास तत युगसम बुझ पड़ केहि विधि मन धर धीर ।
करुणागार दीन जनतारिणि हरिअ सकल उर पीर ।।
माङथि वर गणनाथ रमेश्वर महाराज अधिराज ।
दारा सुअन सहित मिथिलेश्वर चिर जीवथु शुभकाज ।।

शिवदत्त

(१४८)

ब्रह्माणी

ब्रह्मशक्ति जे चढ़िय आइलि, हंसयुक्त विमान यो ।
कमल आसन देखु सुन्दर, शोभए कुण्डल कान यो ।।
चारि मुख तह वेद बाँचथि, पीत वसन विराज यो ।
कुश कमण्डलु दण्ड लय कर, चललि दैत्य समाज यो ।।
दृग लाल परम विशाल शोभित, मुकुट सुभग समारि यो ।
सिंचित जल रण फिरहि चौदिस, शोभए भुज भल चारि यो ।।
शरण कए मन मोर सिरजल, जगत गति नहि जान यो ।
काहि से मन विकल कएलह, शिवदत्त पद ध्यान यो ।।

तन्त्रनाथ झा

(१४९)

दुर्गा

सिंह चढ़लि माता असुर-निकन्दिनि मेदिनि डोल गति-दापे ।
आयुध उग्र शोभए आठो कर जाहि डरे अरि उर काँपे ।।
दुर्वा-दल सन कान्ति मनोहर, सिरेँ शोभ चांन कलापे ।
प्रणत मुकुन्द माङए वर दुर्गे, हरिअ त्रिविध भव-तापे ।।

(१५०)

जानकी

मङलमयि मैथिलि महरानी ॥ध्रु०॥
मङलमयि मिथिला भूमिक जे, स्वासिनि सब गुणखानी ।
मैथिल जनकाँ मोद प्रदायिनि, महि तनया वर-दानी ॥
आदि शक्ति जगतारिणि कारिणि, हरनि सकल दुखखानी ।
श्री साकेतधाम स्वामिनि, श्रीरामचन्द्र पटरानी ॥
विष्णु भवन लक्ष्मी रूपा जे, शंकर भवन भवानी ।
कृष्ण संङ्ग वृषभानु नन्दिनी, विधि घर मधि जे बानी ॥
निज जनहित अवतरि महिमण्डल, करथि दुष्ट दलहानी ॥
महिमा अमित पार के पाओत, वेद ने सकथि बखानी ॥
करु उद्धार कृपामयि मिथिलाकेँ, निज नैहर जानी ।
राखु शरण 'यदुवर' जनकाँ नित रक्षा करु निज पानी ॥
(मिथिला-गीताञ्जलि)

ऋद्धिनाथ झा

(१५१)

जननी तनय विनय सुनु थोर हमर हृदय करु वास ।
जननी सतत जपत मनु तोर जबतक मम घट स्वांस ॥
जननी कलिक पराक्रम थोर जनन मरन भय त्रास ।
जननी निरभय पद तुअ कोर जतय तनय कर वास ॥
जननी करती करमक डोर लक्ष्मीपति मन आस ।
जननी तुअ सुत अति मति भोर हेरहु निज पद दास ॥

राजलक्ष्मी

(१५२)

श्यामा

श्यामा चरण कमल हम पूजब जेहि पूजे त्रिपुरारी ॥सखी॥
विधि हरिहर जेहि ध्यान धरथि नित स्तुतिरत सभ असुरारी ॥
रत्नमुकुट मणि नूपुर राजित मुण्डमाल छवि न्यारी ।
भक्तानुग्रह कारिणि शंकरि मन्द हसन सुखकारी ॥
राजलक्ष्मी शरणागत जानिय भव सँ लेहु उबारी ॥सखी॥

त्रिलोचन झा

(१५३)

चण्डि ! तोहर मिथिला देश ॥
जकर सुपच्छिम भाग वैशालि, धारि सुन्दर वेश ।

जाहि भूमिसँ जन्म लेलहुँ, भै सुता मिथिलेश ॥
तकर महिमा हीन दिन-दिन भाव भाषा भेष ।
दरथि लोचन विनय कर पुर, हरु क्लेश अशेष ॥
(मिथिला-मोदसँ)

(१५४)

आब करु जनुदेरि हे मैया, मैथिल दिशि हेरू ॥
जनिके सम्पत्ति आन दुहै अछि, अपने बन्हल मनु नेरू ।
मिथिला काम धेनु पय वञ्चित, छिन्न मलीन दुख भेरू ॥
'लोचन' मान बचाबथि कोन विधि, उद्यम चढ़थि सुमेरू ।
करुणामयि जननी अपने छी, नाम ककर हम टेरू ॥
(मिथिला मोद)

गणनाथ

(१५५)

समदाउनि

अकथ तत्व तुअ तारिणि अम्बे महिमा अगम अपार ।
पुरुष शरीर मनुज तनु धयलहु राम विदित संसार ॥
अनुपम श्याम अङ्ग सन सुन्दर नयन युगल रतनार ॥
मर्यादा गुण सकल विहित विधि जग व्यवहार प्रचार ॥
धन्य धन्य 'गणनाथ' भाग भेल लखि लखि छवि गुणसार ॥

(१५६)

एहि कलिकाल उच्च द्विजवर कुल जनम तकर निरवाह अम्बे ।
कयलहुँ सकल दयामयि अपनहिँ, उर भरि पसर उछाह-अम्बे ॥
गुरुवर भय उपदेशि निमाहल, क्रमहि सकल आदेश-अम्बे ।
काशी मे थिर बास देल मोहि, भव विधि छुटल कलेश-अम्बे ॥
ऐलहुँ सदन अपन बुझि गृह मोर, राखब नियत निवास-अम्बे ।
तुअ पद प्रेमधार हिअ उमड़ल, नयन युगल परगास-अम्बे ॥
स्नेह भरल थर-थर तन पुलकित, गदगद बोल अनूप-अम्बे ॥
कएल नेहाल दास करुणामयि, जीवनमुक्त सरूप-अम्बे ॥
प्रणत मगन गणनाथ जोरि कर, माँग एक वरदान-अम्बे ।
तुअ पद रत थिर तारिणि कहइत, त्यागथि देह परान-अम्बे ॥

(१५७)

शंकरि त्रिभुवन जननि शुभङरि, करुणामय पर शिवनारी ।
विश्वम्भर करुणाकर शंकर, उमाकान्त हर त्रिपुरारी ॥
तुअ चरनन सेवारत अनुखन, काशीवास शरणसारी ।

सोमनाथ गणनाथ विनय कर, पुरहु आस कुमतिन टारी ॥

(१५८)

दिअ दरशन करूशन करुणामयि, सुरमुनि ठाढ़ दुआर।
दास भवन होअ उत्सव, जगत जननि दरवार ॥
मणिद्वीप सुवरनमय सुरतरू तर अभिराम ।
रतन वेदि मणिमण्डप तुअ शुभ शोभाधाम ॥
कखन देखब भरि लोचन, मूरति परम ललाम ।
प्रणत चरन युग सेवब, करब अनेक प्रणाम ॥
ब्रह्मा हरिहर जेहि भज, आनक ककर हिसाब ।
कवि गणनाथ विनत भल, विनत मोदमय गाव ॥

श्यामानन्द झा (१५९)

गोसाउनि

जय कमलासिनि ! करुणागारे !
जननि ! महेश्वरि ! त्रिभुवनसारे !
रचित चतुर्भुज रूचिर बिहारे !
कुशलं वितरतु भगवति तारे !
अभिनव-भूषण-भय-विन्यस्ते !
मञ्जु-विपञ्ची-पुस्तक हस्ते !
श्यामानन्द विनोदिनि ! शस्ते !
शुभतमे ! मम दवि नमस्ते !

आरसी प्रसाद सिंह (१६०)

जननि, वीणा-वादिनी ! व्याप्त छी संसार में अहँ,
विपुल-लोकाह्लादिनी ! जननि, विणा-वादिनी !
मोह तिमिरक नाश हो । विगत रजनी भेल, मिहिरक,
आब शारद-हास हो । विजय-मंगल-शंख फूकू,
अयि अशेष-निनादिनी ! जननि, वीणा-वादिनी !
युवक देशक क्षुब्ध यौवन । अग्नि-बोन बजाउ, जय-जय
करथु निर्भय क्रान्ति-वाहन । दिअह नव-साहस, अखण्डित
शक्ति प्राणोन्मादिनी । जननि, वीणा-वादिनी !

काञ्चीनाथ झा 'किरण' (१६१)

जननी ! लिअ आब सुधि मोर ।
पामर दीन विहीन ज्ञान हम जानि न महिमा तोर ॥

यौवन मद मे मक्त छलहुँ मा ! वनिता भोग विभोर ।
हिंसा क्रोध प्रलोभक वस मे कैल स्मरण नहि तोर ॥
यमक बराहिल जरा पकड़लक अपना तन नहि जोर ।
"काञ्चीनाथ" अगति मे करइत छी मा ! मा ! मा ! सोर॥

चन्द्रभानु सिंह (१६२)

जननी, तोहर चरण जौँ पाबी ।
मलयानिल चर्चित चरणाम्बुज-छवि पर शीश चढ़ाबी ॥
जननी, तोहर चरण जौं पाबी ॥
गंधराज कलिकोष-उर्मिला सँ नख-पंक्ति दहाबी,
परमानन्द विभोर-मगन-मन उर-पंकज फलकाबी ॥१॥
माटी पानि गोधन तन-भूतल मोर मराल नचाबी,
संयम शील बढ़ए जन गण मन सौरभ पाबि गुलाबी ॥२॥
वीणक गुंज-कुंज सागर-तट-निर्झर-कंठ-सलाबी ।
दिवाराति संध्या ऊषा पर नयन नीर छलकाबी ॥३॥
गरुता अपन शारदा-धरणी पर हिलकोरि बहाबी ।
समटि स्वतंत्र-मंत्र गंधार्णव रव आकण्ठ धुलाबी ॥४॥
जननी तोहर चरणजौँ पाबी ।

प्रभुनारायण झा 'प्रदीप' (१६३)

हे माय अहाँ बिनु आश ककर

जगदम्ब अहीं अवलम्ब हमर, हे माय अहाँ बिनु आश ककर ?
जँ माय अहाँ दुःख नहि सुनबइ, तँ जाय कहू ककरा कहबइ ?
करू माफ जननि अपराध हमर, हे माय अहाँ बिनु आश ककर ?
हम भरि जग सँ ठोकरायल छी, माँ अहिंक शरण मे आयल छी
देखू हम पड़लहु बीच भँवर, हे माय अहाँ बिनु आश ककर ?
काली-लक्ष्मी-कल्याणी छी, तारा-अम्बे-ब्रह्माणी छी,
अछि पुत्र 'प्रदीप' बनल टूगर, हे माय अहाँ बिनु आश ककर ?

चन्द्रमणि (१६४)

जयति भवानी

जयति भवानी हे कल्याणी, सकल ताप परिताप हरू
देवहुँके दुःख दूर कयल मा, अधमाधम हम, पाप हरू ।
जगत विदित अछि कथा अहाँक, घट घट वासिन हे मइया

कखनहु काली कखनहु दुर्गा, रूप-धारिनी हे मइया
कामाख्या विंध्याचल दौड़ी, हमर मोह भवचाप हरू ।।देवहुँ...।।
जखन-जखन दुख बढ़लै, बनलौ, दैत्य विनासिनि हे मइया
रणमे शुम्भ-निशुम्भ संहारल, महिषा-मर्दिनि हे मइया
मरूभूमि केर मृगा सनक मन, हमर दुःखक अभिशाप हरू ।।देवहुँ।।
रंक निमिष भरिमे हो राजा, दौड़े आन्हर हे मइया
बौका गाबय गीत, चढ़ै गिरवर पर नाङर हे मइया
चरण 'चरणमणि' विलखि पुकारी, हमर कलंकक छाप हरू ।।देवहुँ।।

चन्द्रकान्त झा   (१६५)

जागू जागू जागू मैया जागू तजि ध्यान ये ।
अभागल चन्द आज पहुंचल दलान ये ।।
लाल वसन शोभे कञ्चन वदन ये ।
भाल बीच शोभे दूनू लाल नयन ये ।।
गला बीच फूलक माला खून सन लाल ये ।
नमरल कारी कारी गला शोभे हार ये ।।
तोरि-लोढ़ि फूल अनबै रक्त चन्दन ये ।
साँझ-प्रात पूजन करबै मनुआँ मगन ये ।।
जगमातु की सुनु दीनक गान ये ।
हमरा ऊपर कने खोलू अहाँ ध्यान ये ।।
चन्द्र कहथि मैया कतए नुकायल छी ।
अहाँ दर्शन लेल हमहुँ बेहाल छी ।।

अज्ञात कविक   (१६६)

जय भगवती वरदायिनी मा मंगले मंगल करू
जय शिवप्रिये शंकर प्रिये मा मंगले मंगल करू ।
जय अम्बिके जगदम्बिके जय चण्डिके मंगल करू ।।
अनन्त शक्तिशालिनी अमोघ शस्त्रधारिणी ।
निशुम्भ-शुम्भ मर्दिनी त्रिशुलचक्र पायनी,
हे ईश्वरी, परमेश्वरी रामेश्वरी मंगल करू ।।
कराल मुख कपालिनी विशाल मुण्डमालिनी,
असीम कष्ट हारिणी त्रिमूर्ति सृष्टि धारिणी,
दुःखहारिणी सुखदायिनी हे पार्वती मंगल करू ।।
प्राकृत तुहीँ साकृत तुहीँ दया तुहीँ क्षमा तुहीँ,

प्रभा तुहीँ छटा तुहीँ शुभा तुहीँ कला तुहीँ,
हे ललित शक्तिप्रदायिनी सिद्धेश्वरी मंगल करू ।।

(१६७)

सबके सुधि अहाँ लै छी अम्बा, हमरा किए बिसैर छी ये ।।
थिकहुँ पुत्र अहीं केर हमहूँ, ई तँ अहाँ जनै छी ये ।
रैन दिवस हम मिनती करै छी, दर्शन किए ने दै छी ये ।।
अम्बा अम्बा जय जगदम्बा, तारण तरण करै छी ये ।
हमरा बेर मे आँखि मुनै छी, ई नहि उचित करै छी ये ।।

जगज्ज्योतिर्मल्ल   (१६८)

मधुकैटभ महिषासुर मारल इन्द्र आदि देव तव जो करे ।।
धूम्रलोचन जम घरहि पठाओल चण्डमुण्ड रक्तबीज संहरे ।।
समरे भवानि हाथे बैरि जिब गेल सुरमुनि मने हरख भेला ।
सवे दिगपाल अपन पद थापल सवक विषाद खनहि दुर गेला ।।
ताहि उपर शुम्भ निशुम्भ विदारल चौदिस जय जय किन्नर गाव ।
जहा जहा संकट देवि उधरि लेह नृप जगजोतिमल भगतिहि लाव ।।
(कुञ्जविहारी नाटक)

(१६९)

भवभयभञ्जनि असुर विनासिनि । जगजनपाविनि त्रिभुवनकारिनि ।
मनसुखदायिनि रिपुगणमारिनि । जयजगदायिनि जय बलकारिणि ।।
सुरगणनन्दिनि दुरितनिकन्दिनि । मृगपतिचारिणि समरविदारिणि ।।
नृप जगजोति मति चण्डीचरनरति । राग मल्लार जति ताल रुपक गति ।।
(मुदित कुवलयाश्व नाटक)

(१७०)

मातु भवानी शरण तोहारो जाओ बलिहारी ।।
मन क्रम वचन अओर नहि भावत ।
एहि संसार काहे अटकावत ।।
अओर कि अओर सञो मन मेरो तोह सञो ।
मोरब प्रीति जैसे शसि कुमुदिनि सञो ।।
नृप जगजोति कह आस न कायक ।
जनम जनम तोहरे गुण गायक ।।
चरण कमल तुअ शरण भए मोहि ।
अपने रोपि का मारँह पालह ।।
(मुदित कुबलयाश्व नाटक)

(१७१)

दालिम दशन पाती अथर विद्रुम कांती ।
सुखक सदन प्रसन्न वदन पुनित चाँदक भाँती ।
देवि हे तौँ हहि जगतमाता ।
सकल सञ्यत मूनि अभिमत, चारि पदारथ दाता ।।
नयन भौंह विलासे मदनवाण प्रगासे ।
विकल कमलथुगल ऊपर भ्रमन पाँति विकासे ।।
दानव दलन शीले विहित समर लीले ।
जगततारिणि दुरित दारिनि विवुध पालन धीरे ।।
नृप जगजोति गाबे तुअ पद मन लाबे ।
जेहन जलद चातक चाहए आन किच्छु नहि भावे ।।
(मुदित कुबलयाश्व नाटक)

(१७२)

नयनक दोष कतय नहि होए । जननि कृपावसे दूकर धोए ।।
करजोड़ि पए पड़ि विनमञो तोहि । एहि दुखभार संतारह मोहि ।।
कतए कतए नहि कएलह उधार । पालि न मारिअ करह विचार ।।
भयभञ्जनि तोहे माए भवानि । आबे किए बिसरलि अपनुकि वानि ।।
नृप जगजोति कह न कर उदास । जतहि ततहि जग तोहरे आस ।।
(तत्रैव)

(१७३)

दिग दंल अरुण किरण परगास । आरति लाओब परशिव पास ।।
रे रे भवानी सरण तोहारि । जननि कृपा करु भवभय तारि ।।
दिन दश लागि करब बहु बात । ममतामोह भरम मदमात ।।
परशिव वरिय सुधारस सार । अलि पद सरसिज भेदए पार ।।
ऊग कलारवि दिगरस वेद । चाँद सुरुज खेल, पवनक भेद ।।
विहि आसने गुण महनिसि सेव । गगनविन्दु रस शशिकर देव ।।
नृप जग्जोति एहो रस गावे । गुरु परसाद परम लए पावे ।।
(गीतपञ्चारिका)

(१७४)

सकल असार सार पद पंकज तोहर मनहिं बिचारल हे ।
जे तोहे करब से करह भवानी हठ कए हृदय लगाओल हे ।।

गुण दोष मोहि एकओ नहि जानह दारुक पुतरि उदासिन हे ।
जे किच्छु करावह करञो से माता हमे नहि अपन स्वआधिन हे ।।
तोह छाड़ि आन काहु नहि समुझओ दीन न भाषञो वाणी हे ।
भव जञ्जाल जाल मोर जालह शरणागत मोहि जानी हे ।।
तोहे ठकुरायिनि हमे तुअ सेवक ई अपने अवधारी हे ।
कत अपराध पड़त अगेआनहि से सबे हलह समारी हे ।।
नृप जगजोतिमल एहन बुझाबए चण्डि चरन चित राखी हे ।
सब सिधि आबए भगवति सुमरि सुमरि सुमरि मन साखी हे ।।
(मुदित कुबलयाश्व नाटक)

जगत्प्रकाशमल्ल (१७५)

नहि आन गति हमरा माता ।।
मोजे मन वचन कएल तुअ सेवा । करुणा कर कुल देवा ।।
मोर अपराध क्षमह तोहे माता । मोर रिपु का कर घाता ।।
एहे रांसार तोहे देवि सिरिजर । तोहहि देह अभयवर ।।
करे जोरि विनति कर प्रकाश । पुराबथु मोर आश ।।
(प्रभावती हरण)

(१७६)

नहि धन नहि जन नहि आन देवा । मोञ कएल जननि तोहर एक सेवा ।।
तोर करुणा ते मोर सब परिपूर । निय पद सञो हम जनु कर दूर ।।
नित नित मागल मय ई तुव पासे । पुरह भबानी हमर मन आसे ।।
जगतप्रकाश मल्ल भूपति भासे । जे हमरा अरि कर तसु नासे ।।
(तत्रैव)

(१७७)

अनेक अपराध होए हमरा, क्षमह जगत मात ।
किछु सेवा कएल मोए, नित नित करह सुदिठि पात ।।
करुणा ते सुनि हमर विनिति पुरह तोहे भवानि ।
चारि पदारथ मागल मोए तोहे से देह सेवक जानि ।।
अउर कि विनति करब हम तोह ई सब तोहहि जान ।
पद युग धरि कह प्रकाश नृप सरण नहि मोर आन ।

(१७८)

अथिर कलेवर जानु हे कमलक पात जल तूल हे ।।
भवन कनक जन रजत आदि जत थिर नहि रह सब जने ।
सुत मित सब धन सुख दुख शरीर अथिर जानल सब मने ।।

सिरजन शरीर ई ई सबका मन नृप अवयव दासे ।
मनहि पाबय पुने अधरम अपजस मन बसे पाव एत पासे ॥
जगत प्रकाश आस कएल तोहर चान्दशेखर सिंह भाय ।
जगतजननि पथ हे थिर राखह दुहू जनक दुहू काय ॥
(मैथिली शैव साहित्य)

(१७९)

जत अपराध मोर क्षमह भवानि । होएतहु बेर बेर जानि अजानि ॥
शंकट बड़ भेल दुर कर दुख । सुदिठिहि देखि कए करु मोहि सुख ॥
निअ शिशु जनु भिषि मगाबह मायि । सब दुख मोर देत्रि कहि नहि जाइ ॥
जगतप्रकाश कह तोहे अधार । करुणा कर मोर कर उपकार ॥

(१८०)

कृपा करह जगत जननि माता । तोहे भवानि सब लोक का धाता ॥
खीन सेवक हमे देखि कर करुना । कि कहब माता मोए तोहर गुना ॥
जगत्प्रकाश नृपति कर विनती । जनम जनम होउ तोर पदे मती ॥

(१८१)

भज मन जगजननी भव भाविनी ।
यो किछु कोयि करजन मानसा भरण पुरण करतारिणि ।
शिर पर चन्द्र मुकुट विराजे मुख वेरारि सोहे ।
सोहे तिलक पटम्बर कुण्डल देखि महेशर मोहे ॥
(तत्रैव)

जितामित्रमल्ल (१८२)

नमो मृडानी गिरितनया ।
सुरजन ईश सकल जन पूजित पद सरोज सदय हृदया ।
देवि भवाणि सुराधिप माया त्रिभुवन पारिणि जलधि निलया ॥
कण्ठ विराजित हाल फणामणि चौसठि पीठ महाविजया ।
डिम डिम डिम डमरूक राविनि ।
कुट कुट कटक चारु चालिणि ॥
थयि थयि थयिअ बाज मृदङ्गिनि ।
धूमि धिमि धिमि मोद मोहिणि ॥
देवि महेशरि मोहि निहारह शंकर हृदय सयानी ।
मल्ल जितामित्र भूपति वाणी पुरह मनोरथ हमर भवानी ।
(मैथिली शैव साहित्य)

(मैथिली शैव साहित्य)

(१८३)

शंकरी

जय जय शंकरि शकर जाये । थिति कृति संहृति कारिणि माये ॥
जलद कनक शशि रुचि सम देहा । त्रिगुण विधायिनी त्रिगुण सिनेहा ॥
हरि विधि वासव दिनपति चंद । तुअ पद पंकज के नहि दन्द ॥
मल्ल अमित जित भूपति वाणी । पुरथु मनोरथ शम्भु भवानी ॥
(मैथिली शैव साहित्य)

(१८४)

जय हिमालय नन्दिनी ।
हरक घरनि तोहे देवि गोसाउनि । चौदह भुवनक रानी ।
विष्णुक घर तोहे कमला सुन्दरि ब्रह्मा घर तोहे वानी ॥
जत किछु जगत तोहर थिक विलसित तुअ गुण अपुरुब भाँति ।
कहुखने बाला कहुखन तरुणी कहुखने अपुरुब काँति ।
(मैथिली शैव साहित्य)

भूपतीन्द्रमल्ल (१८५)

हे देवि शरण राख भवानि ।
मन वच करम करओ मान किछु से सवे तुअ पद जानि ॥
हमे अति दीन खीन तुअ सेवा राखह निय जन जानि ॥
अविनय मोर अपराध सम्भव मन जनु राखह आनि ।
अओर इतर जन जग जत से सवे गुण रसमय से वानि ॥
तुअ पदकमल भमर मोर मानस जनमे जनमे एहो भानि ।
भूपतीन्द्र नृप एहो रस गावे जय गिरिजापति बानि ॥
(हिस्ट्री ऑफ मैथिली लिटरेचर)

(१८६)

जय-जय दायिनि देवि भवानी । करह कृपा मोहि निय सुत जानी ॥
मन कय दीप ज्योति कय ज्ञान । आरतिकरन सहस्त्र दले मान ॥
आनन्द गोघृत मन कय भावे । नृप भूपतीन्द्र मल्ल भने गुणिगावे ॥
(मैथिली शैव साहित्य)

(१८७)

ई जग जलधि अपारे । तठि देवि मोहि कडहारे ॥

धन जन यौवन सबे गुन आगर नरपति तेजि चल काय ।
ई सब संगति दिन दुयि बाउल आटल बिछुड़िअ जाय ॥
जे किछु बूझि सार कए लेखल देखल सकल असारे ।
इन्द्रजाल जनि जगत सोहावन त्रिभुवन जत अधिकारे ॥
तुअ प्रसादे साध सभ पूरत दुर जायत दुख भाले ।
से मोय जानि शरण अवलम्बन सायद होयत संतारे ॥
भूपतीन्द्र नृप निज मति एहो भन ई मोर सकल विचारे ।
देवि जननि पद पंकेज भल्लहु तेजि निखिल परिवारे ॥
(मैथिली शैव साहित्य)

(१८८)

असि त्रिशूल गहि महिष विदारिणि । जनभाविनि जगतारण कारिणि ॥
चण्ड मुण्ड वध कय सुरकाजे । शुम्भ निशुम्भ वधइते देवि छाजे ॥
सकल देवगण निर्भय दाता । सिंह चढ़ लिखा फिर माता ॥
भूपतीन्द्र देब कएल प्रणापे । देवि प्रसादे पुरओ मोर कामे ॥

प्रतापमल्ल (१८९)

किदहु कर्म मोर हीन रे माता जनि दुष रे धिया ।
किदहु कुलिस कए रखलादहु जनि मृग व्याधक फसिया ॥
किदहु पुरुब कुकृत फल भुगतल निफल भेल ते काजे ।
किदहु विनिकसे गिरिवर नान्दनि भेलि हे विमुख आजे ॥
(मैथिली शैव साहित्य)

(१९०)

हेरह हरषि दुख हरह भवानी । तुअ पद शरण कए मने जानी॥
मोय अति दीन हीन मति देषि । कर करूणा देवि सकल उपेषि॥
कुतनय करय सकल अपराध । तैअओ जननिकर वेदन बाध ॥
परतापमल्ल कहए कर जोरी । आपद दूर कर करनाट किशोरी ॥
(तत्रैव)

जगतचन्द (१९१)

जय देवि वर देह करह उधार । तोहहु कयल मात जगत विचार ॥
वाण खरग चक्र पात्र धर हाथ । चरम गदा धनु बिन्दु तुअ साथ ॥
केसरि उपर छलि त्रिभुवन माता । सुर असुर नर जगहुक धाता ॥
जगत चंदन भन आदि सूत्रधार । शंभु सदाशिव करथु बिहार ॥
(मैथिली नाटकक उद्भव अओर विकास)

✠✠✠